अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा

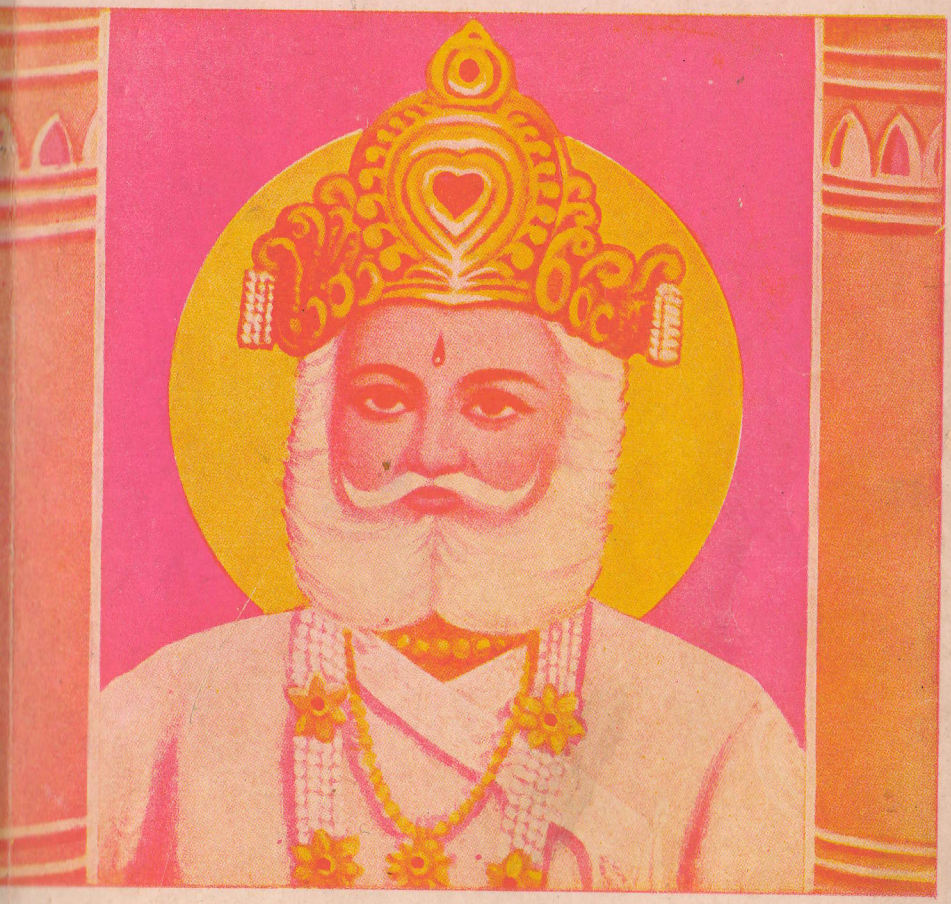

आग्रेय गणराज्य संस्थापक श्री अग्रसेन जी महाराज

—निरंजन लाल गौतम

कार्य विवरण-१९८२-८३

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा(पंजीकृत) देहली-३२ के कार्य में हुई प्रगित सम्बन्धी महामन्त्री का प्रतिवेदन

(७-१-८२ से ३१-३-८३ तक)

मान्यवर सदस्यगण एवं पदाधिकारी महानुभावाः,

सर्वप्रथम मैं अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के पदाधिकारियों और कार्यकारिणी सदस्यों का आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिनके सौजन्य और अटूट विश्वास के फलस्वरूप मुझे इस महासभा का महत्वपूर्ण महामन्त्री पद सौंपा गया। इस प्रकार दिनांक ७-१-८२ का दिन मेरे लिए एक सौभाग्यशाली दिन था जबकि सम्पूर्ण सदन का सर्वसम्मत विश्वास मुझे प्राप्त हुआ।

मैं इस अवसर पर अपने परमपूज्य एवं आदरणीय मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल का विशेष रूप से आभार मानता हूँ जिन्होंने सभा के हित में अपने पद का त्याग कर मुझे अपना आशीर्वाद दिया और अपने उत्तरदायित्व को वहन करने के लिए मुझे उपयुक्त पात्र स्वीकार किया।

मैंने दिनांक ७-१-८२ को अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के महामन्त्री पद का कार्यभार संभालने के पश्चात् अपनी सुविधा और कार्य के सुचारू संचालन की दृष्टि से शाहदरा स्थित अपने कार्यालय पंकज रसायनशाला, ७/२८, ज्वाला नगर, गौतम मार्ग, के साथ ही महासभा का कार्यालय स्थापित करके विधिवत् दिनांक ९-१-८२ से महासभा का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। सौभाग्य से मुझे १५-२० सदस्यता फार्म, एक रसीदबुक, एवं कार्यवाही का रजिस्टर १९६८ से अद्यतन चालू मिल गया था जिनके सहारे अपनी पसन्द की कार्यालय व्यवस्था बनाने से पूर्व ही कार्य प्रारम्भ करने में सुविधा हुई। सर्वप्रथम महासभा के सदस्य बनाने का अभियान प्रारम्भ किया गया जिसके फलस्वरूप कार्यालय के लिए सभी प्रकार की स्टेशनरी तैयार कराने में सुविधा हुई और महासभा के कोष से व्यय हेतु धन लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

२. महासभा का कार्य प्रारम्भ तो हो गया किन्तु स्थान-स्थान पर मुझे इस प्रश्न का उत्तर देना पड़ा कि मैंने नई सभा क्यों बनाई है ? यद्यपि मेरे इस समाधान से कि यह सभा नई नहीं, सन् १९१८ में स्थापित हुई थी, प्रश्नकर्ता सन्तुष्ट तो हो

जाते थे किन्तु मुझे महासभा के प्रारूप और गौरवपूर्ण इतिहास की पृष्ठभूमि में सोचना पड़ा और बहुत सोच विचार कर महासभा के "गौरवशाली इतिहास की एक झलक" शीर्षक से एक प्रचार पत्र तैयार करने की आवश्यकता अनुभव हुई जो सौभाग्य से २७-१-८२ तक छपकर तैयार हो गया। इसकी प्रतियां मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत कर चुका हूँ।

३. इसी बीच सदस्यता अभियान के साथ-साथ दिनांक १२-१-८२ से देश के प्रमुख एवं परिचित कार्यकर्ताओं के साथ पत्र व्यवहार प्रारम्भ कर दिया था जिसके फलस्वरूप कई महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक पत्रोत्तर प्राप्त हुये जिनमें विशेष उल्लेखनीय पत्र हैं :—

१. श्री बनारसी दास जी गुप्त, प्रधान—अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन,
२. श्री शशि भूषण जी सिंहल— अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।
३. श्री मुरारी लाल जी अग्रवाल, संचालक, जगत टाइम्स, मथुरा।
४. श्री भगवती प्रसाद जी गुप्त, अलीगढ़।
५. श्री विश्व बन्धु जी गुप्त, गुलावठी।
६. श्री शिव प्रकाश जी गुप्त, दिल्ली।
७. प्रो० श्री मनमोहन जी, हापुड़।
८. श्री बाबूराम जी गुप्त रिटायर्ड हैड मास्टर, लक्ष्मणगढ़।
९. श्री सुखराम जी बंसल, छर्रा।
१०. श्री सुखलाल जी मित्तल, अलीगढ़।
११. प्रो० श्री राम रत्न जी गुप्त, मुजफ्फरनगर।
१२. श्री ज्योति प्रसाद जी गुप्त, मेरठ।

४. उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त महासभा की सूचनाएँ प्रमुख अग्रवाल पत्रिकाओं को प्रकाशनार्थ भेजी गईं। प्रसन्नता की बात है कि लगभग सभी पत्रिकाओं ने हमारे समाचारों को प्रमुखता और प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशित किया है। हमारे प्रेषित समाचार जिन पत्र-पत्रिकाओं में अब तक प्रकाशित होते रहे हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

१. जगत टाइम्स, मथुरा।
२. अग्रचेतना, मुजफ्फर नगर।
३. अग्रवाल जागृति, बम्बई।
४. पीड़ित वाणी, गुलावठी।
५. कर्मठ गुरु, लखीमपुर खीरी
६. अग्रवाल धर्म, धौलपुर।
७. अग्रकुल, हिसार।
८. अग्रसैन पुष्पांजलि, इन्दौर।
९. अग्रोहा जन्मभूमि, हिसार।
१०. अग्रसैनवाणी, गंगापुर सिटी।
११. वैश्य परिवार, मेरठ।

यह विशेष उल्लेखनीय है कि प्राय: सभी पत्रिकाओं ने अपने एक से अधिक अंकों में हमारे समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किए हैं। एतदर्थ हम इन सभी पत्र पत्रिकाओं के सम्पादक महानुभावों का आभार प्रकट करते हैं।

५. २९-१-८२ को मुझे जिला अग्रवाल सभा, छतरपुर द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह आयोजनों के उद्घाटन और समापन अवसर के लिए आमंत्रित किया गया। अत: इस सुअवसर को मैंने महासभा के प्रचार का अच्छा माध्यम बनाया और २८-१-८२ की रात्रि के १० बजे छतरपुर पहुँच गया। २९,३० तथा ३१ जनवरी, ८२ को सम्पन्न हुए १८ सामूहिक विवाहों के कार्यक्रम देखने और समझने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। जिला अग्रवाल सभा, छतरपुर के परम उत्साही एवं प्रबुद्ध प्रधानाचार्य श्री रामसेवक जी के सहयोग से छतरपुर तथा आसपास के कई प्रमुख बन्धुओं से परिचय प्राप्त हुआ और महासभा का प्रचार साहित्य उन तक पहुँचाना सरल हो गया तथा १० प्रमुख अग्रवाल कार्यकर्ताओं को महासभा का सदस्य बनाया गया। इस कार्य में मुझे श्री मोतीलाल जी अग्रवाल, छतरपुर से भी क्रियात्मक सहयोग मिला। अत: मैं इन दोनों महानुभावों का हृदय से आभारी हूँ।

मेरे छतरपुर प्रवास में श्रीयुत प्रो० इन्द्रजीत जी गुप्त के आमंत्रण पर बसन्त पंचमी के दिन स्थानीय पी० जी० बी० टी० कालेज में भी मेरा "दहेज उन्मूलन में अध्यापकों का योगदान" विषय पर भाषण हुआ जिसकी सर्वत्र सराहना हुई। मेरी छतरपुर प्रचार यात्रा का अविकल विवरण जगत टाइम्स, मथुरा में प्रकाशित हो चुका है। छतरपुर प्रवास में मुझे श्रीयुत किशन लाल जी तथा श्री बाबू लाल जी अग्रवाल का जैसा आत्मीय सहयोग मिला मैं उनका आभारी हूँ।

छतरपुर से चलकर मैंने झांसी, ग्वालियर और मथुरा में ठहर कर महासभा के सदस्य बनाए। इन स्थानों पर श्री पुरुषोत्तम दास जी, झांसी, श्री हरीश जी गुप्त एवं सुशील कुमार जी बंसल, ग्वालियर तथा मथुरा में श्री मुरारी लाल जी अग्रवाल का पूरा सहयोग रहा। इस प्रचार यात्रा की मधुर स्मृतियों को साथ लेकर मैं दिनांक ५-२-८२ को शाहदरा पहुँचा।

प्रचार यात्राओं की श्रृंखला में मैंने उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र विशेषकर मुजफ्फरनगर, मेरठ, पिलखुवा, आदि स्थानों की प्रचार यात्राएँ करके महासभा का संदेश जन-जन तक पहुँचाया और उपर्युक्त स्थानों पर महासभा का अच्छा प्रचार हुआ।

सितम्बर, १९८२ में मैंने झुंझुनूं, लक्ष्मणगढ़, फतहपुर और चूरू की यात्राएँ की जहाँ स्थान-स्थान पर मेरे भाषण हुए और महासभा के प्राचीन इतिहास की जानकारी प्राप्त हुई। इस यात्रा में फतहपुर के माननीय पंडित देवकी नन्दन की खेडवाल और चूरू के श्रीयुत गोविन्द जी अग्रवाल से जो बहुमूल्य जानकारी मुझे प्राप्त हुई, मैं इन महानुभावों का हृदय से आभारी हूँ। साथ ही श्री भगवती प्रसाद जी खेतान झुंझुनूं, श्री बाबू लाल जी गुप्त, लक्ष्मणगढ़, श्री ज्ञान प्रकाश जी गुप्त, चूरू तथा अग्रवाल संसद चूरू के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सहयोग के लिए मैं इन्हें धन्यवाद देता हूँ।

इसी प्रकार जून मास में जिला सवाईमाधोपुर अग्रवाल नवयुवक संघ गंगापुर-सिटी के विशेष निमंत्रण पर इसके हिन्डोन अधिवेशन में भाग लिया। फलस्वरूप यह संघ म । भा के साथ सम्बद्ध हो गया है जिसके साथ ३६ स्थानीय सभायें हैं।

अक्तूबर, ८२ में अग्रसैन जयन्ती के अवसर पर अग्रवाल नवयुवक संघ अम्बाह (मुरैना) म० प्र० के विशेष आग्रह पर अम्बाह गया और लौटते समय धौलपुर में भी अग्रवाल सभा, धौलपुर के सभा अधिकारियों के साथ सम्पर्क किया।

२० जनवरी, १९८३ से २४ जनवरी, १९८३ तक अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के सप्तम वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर वाराणसी की यात्रा की और साहित्य एवं परिपत्रों द्वारा तथा व्यक्तिगत सम्पर्क साधकर विशेषकर पूर्वांचल की अग्रवाल सभाओं के अधिकारियों से परिचय बढ़ाया गया और उन लोगों ने अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्य को समझा और सराहा।

मुझे यह कहते हुए हर्ष है कि उपर्यक्त प्रचार यात्राओं के लिए जो निमंत्रण पत्र प्राप्त हुए उसका श्रेय उन परिपत्रों को है जो "महासभा के गौरवशाली इतिहास की एक झलक" नाम से प्रकाशित और प्रसारित करके सभी अग्रवाल सभाओं को एवं सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भेजे गए थे। इन प्रचार यात्राओं का फल यह हुआ कि नवीन सदस्य बने और नवीन अग्रवाल सभाओं से सम्पर्क स्थापित हुआ।

६. दिनांक ८-२-८२ से महासभा का प्रचार साहित्य देश की समस्त अग्रवाल सभाओं और कर्मठ कार्यकर्ताओं को भेजा गया। फलतः दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, बंगाल, असम, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा पंजाब की अग्रवाल सभाओं तक इस महासभा की आवाज़ पहुँचाई जा सकी। हमें पूर्ण विश्वास है कि अब तक देश की सभी सभाएं और कर्मठ कार्यकर्ता इस महासभा के गौरवपूर्ण अतीत और उज्ज्वल भविष्य से अवगत हो चुके हैं और देश में हमारे प्रचार और सेवा कार्य का क्षेत्र विस्तृत हो चुका है।

७. हमने निम्नांकित ५ कार्यों को समाज सेवार्थ चुना है उनमें हुई प्रगति निम्न प्रकार है :—

१. महासभा के पूर्व गौरव को प्राप्त करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर सदस्यता अभियान।
२. विवाह योग्य अग्रवाल कन्याओं के लिए ऐसे सुयोग्य वरों के नाम पते पंजीकृत करके कन्याओं के ऐसे अभिभावकों तक पहुँचाना जो दहेज की बढ़ती मांग को पूरा करने में असमर्थ हैं और अपनी कन्याओं के विवाह नहीं कर पाते।
३. आजीविका की खोज में भटकते हुए अग्रवालों को कार्य दिलाने में सहयोग।
४. राजकीय संकटों में फंसे निर्दोष अग्रवालों को कानूनी एवं अन्य प्रकार से यथासम्भव सहायता देना और दिलाना।
५. देश के किसी भी भाग में, विशेषतः देहली में, अग्रवाल बन्धुओं के अटके हुए कार्यों को पूरा कराने में सहयोग।

उपर्युक्त कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए सर्वप्रथम सदस्यता अभियान पर विशेष बल दिया गया जो संगठन की दृष्टि से तथा महासभा को आर्थिक दृष्टि से आत्मभरित बनाने के लिए परम आवश्यक था। इस कार्य में हमें कितनी सफलता मिली, यह बात निम्नांकित आंकड़ों से आप महानुभावों को विदित हो जाएगी।

महासभा के दूसरे कार्यक्रम विवाह योग्य अग्रवाल कन्याओं के लिए सुयोग्य वरों की खोज का कार्यक्रम द्रुत गति से चलाया गया और प्राप्त जानकारियों के आधार पर वर कन्याओं की सूची तैयार करके अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजी गई।

आजीविका की खोज में भटकते हुए अग्रवालों के लिए आजीविका की खोज के प्रयत्न मात्र किये गए किन्तु सफलता नगण्य रही। यदि धनी व्यवसायी और उद्योगपति अपने कर्तव्य का पालन कर आजीविका की खोज के कार्य में महासभा को सहयोग दें तो यह कार्य संभव हो सकता है।

७ जनवरी, १९८२ से ३१ मार्च, १९८३ तक महासभा के कार्य में जो प्रगति हुई है उनके संक्षिप्त आंकड़े निम्न प्रकार हैं :—

८. गंगापुरसिटी में एक सामान्य अग्रवाल अवयस्क १२ वर्षीय कन्या के साथ जो बलात्कार हुआ, जिसमें उसकी मृत्यु हो गई, इस विषय को इस महासभा द्वारा भारत सरकार और राजस्थान सरकार तक पहुँचाया गया। गंगापुर सिटी में इस निर्मम और जघन्य कांड की बहुत बड़ी प्रतिक्रिया हुई और हजारों नर नारियों ने अपना रोष प्रकट कर सरकार से न्याय की प्रार्थना की। अब यह केस न्यायालय में चल रहा है जिसमें गंगापुरसिटी के सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता एवं प्रवक्ता इस केस की पैरवी कर रहे हैं।

९. कई स्थानों से हमारे पास सहयोग के लिए पत्र आए और जहाँ तक संभव था उनके सभी कार्यों को करने या कराने का प्रयास किया गया जिसको लोगों ने सराहा है।

१०. महासभा के प्रचार प्रसार के कारण आज दिन भारत के सात राज्यों में महासभा के सदस्य बने हैं और २४ नई अग्रवाल सभाओं को महासभा के साथ संबद्ध कराया गया है। जिन राज्यों में महासभा का विशेष प्रचार हुआ है वे हैं :—

हरियाणा, देहली, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र एवं राजस्थान।

१. वार्षिक सदस्य बने—११२
२. आजीवन सदस्य बने—२५
३. संरक्षक सदस्य बने—१
४. उपाश्रय दाता बने—१
५. अग्रवाल संस्थाएं सम्बद्ध हुईं—२४
६. महासभा के लिए—
   १. एक हिन्दी टाइपराइटर तथा रिकार्ड रखने के लिए एक अलमारी क्रय की गई।
   २. "महाराजा अग्रसैन और अग्रवाल समाज" लघु पुस्तिका का प्रकाशन हुआ।
   ३. एक कन्या के विवाह पर ४५१ रुपये की सहायता दी गई।

१९८२-८३ में ३०००/- की दो एफ० डी० पंजाब नैशनल बैंक, चावड़ी बाजार देहली में और ३१ मई १९८३ तक ५०००/- को दो एफ० डी० यूनाइटिड कमर्शियल बैंक, शाहदरा में करवाई जा चुकी हैं।

कार्यकारिणी की ५ बैठकें बुलाई गईं जिनमें कार्यकारिणी सदस्य और पदाधिकारियों की अच्छी उपस्थिति रही :—

महासभा के कार्यालय से ३१ मार्च, १९८३ तक ११७६ पत्र एवं परिपत्र भेजे गए। ऐसा कोई पत्र नहीं जिसका उत्तर महासभा कार्यालय से न दिया गया हो। संक्षेप में इतना और बताना चाहूँगा कि महासभा के पूर्व संचित धन को बिना छुए हुए १५ मास के कार्यकाल में सम्पूर्ण व्यय करते हुए ६ हजार से अधिक रुपया बैंकों में जमा कराया गया।

मैं अपने कार्य का विवरण देते हुए यह भी बताना चाहूँगा कि मुझे शाहदरा के समस्त अग्रवाल समाज का तो सहयोग रहा ही है, साथ ही शाहदरा के जिन महानुभावों से मुझे विशेष सहयोग मिला है उनमें श्री जय भगवान जी गर्ग, श्री चन्द्र भानु जी गर्ग, श्री ओम प्रकाश जी गर्ग लोहारी वाले, ला० राम गोपाल जी गोयल चक्की वाले, श्री राजेन्द्र प्रकाश जी गोयल अग्रवाल स्पोर्ट्स वाले, श्री देवेन्द्र कुमार जी गुप्ता, श्री मामचन्द जी बजाज, श्री जीती प्रसाद जी गर्ग, श्री मूलचन्द जी गुप्त (वैश्य ब्रदर्स), श्री प्रेम चन्द जी अग्रवाल लोहे वाले, श्री विजय कुमार जी गोयल, श्री के० बी० जैन, तथा श्री हेमचन्द जी जैन, के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मैं इनके सहयोगार्थ सब का आभार मानता हूँ।

अपने सदस्यों एवं पदाधिकारियों के अतिरिक्त मैं श्रीयुत सी० एम० जैन, सी० ए० आडीटर, शाहदरा का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मानद रूप में बड़ी तन्मयता से महासभा के पुराने हिसाब को जाँच कर अद्यतन हिसाब के साथ क्रम बद्ध करने में विशेष रुचि ली और ऐसा मार्ग प्रशस्त किया है जिसके आधार पर भविष्य में भी महासभा के हिसाब को आडिट कराने में सुविधा और सुगमता रहेगी। एतदर्थ महासभा इनकी आभारी है।

यह प्रसन्नता की बात है कि शाहदरा निवासी श्री विजय कुमार जी गोयल महासभा मन्त्री ने जून १९८२ से इस महासभा को सक्रिय योग देना आरम्भ कर दिया है और १९८३-८४ के लिये इन्होंने सदस्यता अभियान एवं कार्यालय के कार्य में सहयोग दिया है।

यह पूरा विवरण देते हुए मैं आप सब महानुभावों का, जिनका सम्बल मेरे पूरे कार्यकाल में मेरे साथ रहा है, एक बार पुनः आभार प्रकट करता हूँ।

आपके स्नेहपूर्ण सहयोग के लिए आकांक्षी—

वैद्य निरंजनलाल गौतम
महामंत्री

आडिट रिपोर्ट

सी० एम० जैन
चार्टर्ड एकाउंटेंट,

१७७, डबल स्टोरी, जी० टी० रोड,
शाहदरा दिल्ली-३२
दूरभाष-२०३६७८

श्री महामन्त्री जी,

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा (पंजीकृत)
७/२८, ज्वालानगर, गौतम मार्ग, शाहदरा दिल्ली-३२

विषय—३१-३-१९८३ को समाप्त होने वाले वर्ष की आडिट रिपोर्ट।

प्रिय महोदय,

मैंने ३१ मार्च १९८३ को समाप्त होने वाले वर्ष के आय व्यय के हिसाब का परीक्षण किया है तथा मेरी तत्सम्बन्धी रिपोर्ट निम्नांकित हैं।

1. इस वर्ष जो हिन्दी टाइपराइटर तथा अलमारी खरीदी गई है उनकी इस वर्ष के लिये घिसाई नहीं निकाली गई।

२. मैं यह सुझाव देता हूँ कि महासभा के संरक्षकों से प्राप्त सदस्यता शुल्क की राशि भी उसी प्रकार स्थिर निधि में जमा कराई जावें जिस प्रकार आजीवन सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशियां जमा कराई जाती हैं।

३. महासभा का हिसाब एक स्थान पर ही लिखा जाना चाहिये।

४. जब तक किसी सदस्य या संस्था से धन प्राप्त न हो जाये तब तक महासभा की रसीद नहीं कटनी चाहिये।

५. उपर्युक्त विषयक ३१ मार्च १९८३ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये महासभा के आय व्यय का हिसाब तथा तुलन पत्र, महासभा द्वारा रखे गये हिसाब, हमें दिये गये रजिस्टरों, सूचनाओं तथा स्पष्टीकरणों के अनुसार हैं।

धन्यवाद सहित,

(ह०) सी० एम० जैन
चार्टर्ड एकाउंटेंट

स्थान—दिल्ली-३२
दिनांक १६ जून, सन १९८३

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा, दिल्ली

आय-व्यय खाता

(३१ मार्च १९८३ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

आय		धन राशि	व्यय		धन राशि
सदस्यता शुल्क खाता			डाक व्यय		२६१-४०
			टेलीफोन व्यय कोषाध्यक्ष		
वार्षिक सदस्यों से	७५९-००		द्वारा		४१-००
संरक्षक शुल्क	१०००-००		वेतन व्यय कोषाध्यक्ष द्वारा		१२०-००
उपाश्रय दाता से	२५१-००		यातायात		२७-६०
अग्रवाल सभाओं			स्टेशनरी		३८७-८६
से सम्बद्धता शुल्क	५००-००	२५१०-००	प्रचार पत्र छपाई		११४-००
पूंजीगत सामान के लिये दान			टाइप राइटर मरम्मत		३२-००
हिन्दी टाइपराइपटर			विविध व्यय		४-००
के लिये दान	१०००-००		तुलन पत्र में ले जाई गई व्यय काट कर हुई आय		३४६१-७९
अलमारी के					
लिये	६४४-००	१६४४-००			
प्रचार साहित्य से बचत					
दान प्राप्त	७००-००				
व्यय	६३३-५५	६६-४५			
कन्या विवाह हेतु दान से बचत					
प्राप्त	४५३-००				
व्यय	४५१-००	२-००			
प्रचार साहित्य बिक्री से		१६८-४०			
बैंकों से ब्याज					
यू० कौम० बैंक से	१८-७५				
पंजाब नै० बैंक से	४०-०५	५८-८०			
	योग	४४४९-६५		योग	४४४९-६५

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा, दिल्ली

तुलन पत्र ३१ मार्च १९८३ के दिन

पूंजी		धन राशि	दायित्व		धन राशि
स्थायी समान			**आजीवन सदस्यता खाता**		
हिन्दी			गतवर्ष के तुलन		
टाइपराइटर	१७१०-४५		पत्रानुसार	११२१-००	
			वर्ष में और		
अलमारी	४३९-००	२१४९-४५	जमा हुआ	२४२४-००	३५४५-००
विनियोग			**साधारण खाता**		
पंजाब नैशनल बैंक चावड़ी			दान प्राप्त		५५१-००
बाजार में खाता नं १०६६			**आय और व्यय खाता**		
में स्थिर जमा			गत वर्ष के तुलन		
(Fixed Deposit)		३०००-००	पत्र के अनुसार		
सदस्यता शुल्क प्राप्तव्य			शेष	१९१०-१३	
			बचत	३४६१-७९	५३७१-९२
श्री प्रेमचन्द बंसल	२१-००				
श्री हरी राम	११-००				
श्री ज्ञान प्रकाश	११-००	४३-००			
रोकड़ हस्ते					
हस्ते कोषाध्यक्ष	४१३-२१				
हस्ते महामन्त्री	१३.०९	४२६-३०			
बैंकों में खाता					
पंजाब नैशनल बैंक में		५१५-४२			
यूनाइटिड कौमर्शियल बैंक		३३३३-७५			
	योग	९४६७-९२		योग	९४६७-९२

ह० सीताराम गुप्त
कोषाध्यक्ष

ह० वैद्य निरंजन लाल गौतम
महा मन्त्री

ह० जे० आर० जिन्दल
प्रधान

ह० सी० एम० जैन
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

स्थान—दिल्ली-३२
दिनांक १६ जून, १९८३

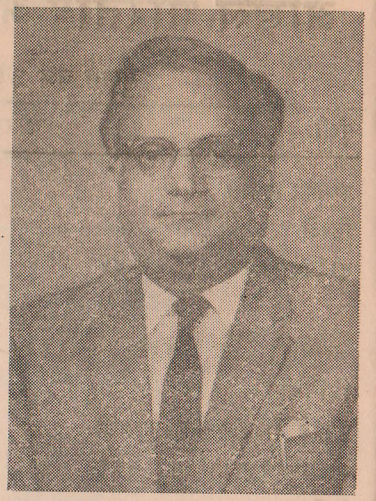

श्री जे० आर० जिन्दल
जिन्दल आइल मिल्स
जी० टी० रोड, शाहदरा देहली-३२

विज्ञान के स्नातक श्री जे० आर० जिन्दल ने अपने कार्यकाल के प्रथम चरण में ही खाद्य तेलों की एक प्रमुख मिल "जिन्दल आइल मिल" जी० टी० रोड, शाहदरा तथा जिन्दल आइल एण्ड जनरल मिल्स, गाजियाबाद में स्थापित कर उन्हें सुचारु रूप से संचालित करके अपनी विशेष प्रतिभा का परिचय दिया है।

सन् १९२७ में जन्मे श्री जिन्दल जी ने अपने कार्यकाल के प्रथम चरण में ही औद्योगिक, व्यापारिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक जीवन में जो महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है वह असाधारण प्रतिभा का द्योतक है। निर्वाधगति से आकर्षित करने वाली आपकी उत्पादन क्षमता हेतु क्रियाशीलता औद्योगिक जगत में प्रशंसनीय मानी गई है।

श्री जिन्दल जी शाहदरा मैन्यूफैक्चरर्स एसोसियेशन के संस्थापक प्रधान, कौन्सिल आफ इण्डस्ट्रियल आरगानाइजेशन, देहली स्टेट, आयल मिल्स एसोसियेशन तथा भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स (ईस्ट देहली) तथा उपप्रधान दिल्ली सिटीजन कौन्सिल, भारतीय कुष्ठ निवारण संघ के मन्त्री, सन् १९५६ से भारतीय रैडक्रास सोसाइटी के मन्त्री तथा देहली प्रोडक्टविटी कौन्सिल के संस्थापक मन्त्री हैं। आजकल आप देहली फैक्टरी आनर्स फैडरेशन के प्रधान हैं। वर्तमान में आप मानद विशेष निष्पादन दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी के पद पर कार्यरत हैं। इससे पूर्व भी आप १९५९ से १९६९ तक मानद दण्डाधिकारी रह चुके हैं।

इसके अतिरिक्त आप देहली स्टेट में अनेक सरकारी समितियों के सलाहकार बोर्ड के भी सदस्य हैं। यथा—पोस्टल, एक्साइज, टेलीफोन, सेल टैक्स, ई० एस० आई० सी० तथा इंडस्ट्रियल, लेबर और एम्लोयमेंट आदि। शिक्षा के क्षेत्र में आप का सम्बन्ध देहली कालेज फार इंजीनियरिंग के साथ है, तथा अन्य हायर सैकण्डरी स्कूलों के साथ

भी आप आबद्ध हैं। आपका सम्बन्ध मेयर कौन्सिल फार सिविल डिफेंस से भी है। भारत के राष्ट्रपति ने आपको भारतीय कुष्ठ निवारण कमेटी का सदस्य मनोनीत किया है।

सन् १९५९ में भारतीय उत्पादक दल के नेता के रूप में आपने पूर्वीय एशियायी देशों की यात्रा की तथा १९६०-६१ में यूरोप, अमेरिका तथा जापान के नगरों का भ्रमण किया। १९७० में जापान, थाईलैंड तथा कोरिया आदि स्थानों का भ्रमण किया। अन्त में सन् १९७१ में विश्व भ्रमण करने वाले दल में आपने देहली फैक्टरी आनर्स फैडरेशन के मन्त्री के रूप में विश्व भ्रमण किया।

आपको अनेक बार इंडियन रैडक्रास सोसाइटी की ओर से सर्वोच्च पदकों द्वारा सम्मानित किया गया है।

श्री जिन्दल जी गत १० वर्षों से अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के प्रधान पद पर रहकर समाज की सेवा कर रहे हैं। इस वर्ष भी आप इस महा सभा के निर्विरोध प्रधान निर्वाचित हुये हैं।

—: ० :—

वैद्यश्री निरंजन लाल गौतम
पंकज रसायन शाला,
७/२८, ज्वालानगर,
गौतम मार्ग,
शाहदरा दिल्ली-३२

जाति, आयु और भोग मनुष्य के पूर्वजन्मों के संचित संस्कारों पर आधारित हैं। इस दृष्टि से अग्रवाल जाति में जन्मे, स्वस्थ दीर्घ आयु एवं वृद्धावस्था में सुखी जीवन वैद्यश्री गौतम जी के सम्पूर्ण जीवन का स्वच्छ दर्पण है।

श्री गौतम जी का जन्म जलेसर निवासी पिताश्री बद्री प्रसाद जी गोयन (गौतम) के गृह में २७ जनवरी सन् १९१३ में हुआ था किन्तु छः मास की आयु पूरी होते होते, इनके पिताश्री ने स्थान परिवर्तित कर आगरा नगर में अपना पत्थर का व्यवसाय आरम्भ कर दिया अतः बालक गौतम को भी अपने पिताश्री के साथ स्थान परिवर्तित करना पड़ा और आगरा में ही इनका लालन पालन हुआ। दुर्भाग्य से पांच वर्ष की स्वल्पायु में ही बालक गौतम के पिताश्री का स्वर्गवास हो गया और इन्हें पैतृक सुख सुविधाओं से वंचित होना पड़ा।

माताश्री द्वारा पालित पोषित होकर आपने समय के साथ हिन्दी विश्व विद्यालय प्रयाग से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की और हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त की। आज दिन आप हिन्दी के यशस्वी विद्वान, अंग्रेज़ी संस्कृत के ज्ञाता, आयुर्वेद के सुपठित विद्वान स्नातक, पीयूषपाणि चिकित्सक एवं पंकज रसायन शाला के रसायनाचार्य हैं। अध्ययनशील, कर्तव्यनिष्ठ, उदारमना, श्री गौतम जी आज दिन वरिष्ठ नेतृत्व वर्ग में सुविख्यात हैं।

शिक्षोपार्जन के पश्चात सन् १९३३ से प्रधान अध्यापक, आर्य समाज के सेवक, आयुर्वेद संस्थान से सेवानिवृत्त, निज औषधि निर्माण व्यवसाय में संलग्न पंकज रसायन शाला के स्वामी हैं। आपने विविध विषयों की दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं जिनमें **अग्रोतकान्वय** (अग्रवाल जाति का इतिहास) प्रथम श्रेणी का ग्रन्थ है। आपने अखिल भारतीय अग्रवाल परिचय ग्रन्थ तथा कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया है।

श्री गौतम जी कई अखिल भारतीय स्तर की संस्थाओं के पदाधिकारी रहे हैं और आजकल अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के महा मन्त्री हैं।

श्री गौतम जी की धर्मपत्नी श्रीमती उमा देवी गौतम धार्मिक विचारों की सद्गृहस्थ महिला हैं। आपके चार पुत्र तथा एक पुत्री आयुर्वेद की अच्छी सेवा कर रहे हैं।

श्री गौतम जी आर्य समाज, आर्य शिक्षा संस्था, आयुर्वेद तथा हिन्दी जगत के पुराने सेवक होने के कारण जाने माने हस्ताक्षर हैं। हाल ही में अग्रवाल जगत में आपको ताम्रपात्र द्वारा तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सार्वजनिक अभिनन्दन द्वारा श्री गौतम जी को सम्मानित किया है।

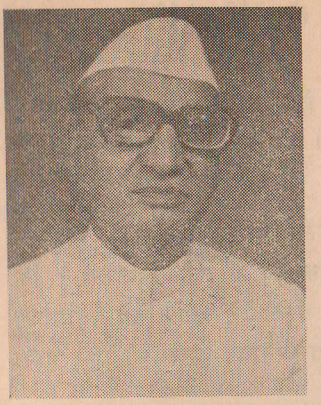

लाला देवकीनन्दन गुप्त,
२८ बाजार लेन, बंगाली मल मार्किट,
नई दिल्ली-११०००१
फोन : ३२४९३८
कार्यालय :—
यूनिवर्सल रेडियो कम्पनी,
१८००-०१ चांदनी चौक,
दिल्ली-११०००६
फोन : २७८१५६
२७५८८३

अग्रोहा के ऐतिहासिक खंडहरों की खुदाई की अग्रवाल समाज की चिर आकांक्षा को पूरा करने वाले तथा छोटे बड़े सभी में "भाईजी" के नाम से विख्यात लाला देवकी नन्दन गुप्त दिल्ली के अग्रवाल समाज और व्यापार जगत के प्रमुख स्तम्भ हैं।

प्रामाणिक अग्रवाल इतिहास के शोध कार्य में सक्रिय अग्रवंश शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री गुप्त का अग्रवाल इतिहास और संदर्भ ग्रन्थों का तथा अग्रोहा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री—सिक्के, टेराकोट्टा टुकड़े, भग्न मूर्तियां व मोती मनके—का संग्रह देश में अपने किस्म का सबसे बड़ा संग्रह है।

आपका जन्म दिल्ली के प्रतिष्ठित बंसल गोत्रीय अग्रवाल परिवार में २५ अप्रैल, १९११ ईस्वी तदनुसार वैशाख बदी द्वादशी संवत १९६८ बार मंगलवार को हुआ। आपके पूज्य पिता लाला कन्हैया लाल जी दिल्ली में सलमे सितारे के प्रसिद्ध व्यापारी थे। उनकी प्रेरणा से आपने सन् १९३६ में यूनिवर्सल रेडियो कंपनी के नाम से अपना व्यापार दिल्ली में आरम्भ किया। अपने कठोर परिश्रम तथा व्यावसायिक सूझबूझ के फलस्वरूप आपने अपनी शाखाएं बम्बई मद्रास, और कलकत्ता में स्थापित कर लीं। आज भारत में रेडियो संबंधी व्यापार तथा उद्योग के प्रमुख व्यवसायियों में आपकी गणना है।

व्यावसायिक तथा औद्योगिक जीवन के साथ-साथ आप सदैव से ही राष्ट्रीय, सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। आपने छात्र जीवन में ही भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में उत्साहपूर्वक भाग लिया था। आप गांधीवादी विचार-धारा के कर्मठ पुरुष हैं तथा शुद्ध खादी आपकी वेश-भूषा है।

लाला देवकी नन्दन जी चांदनी चौक के व्यापारियों के संगठन के प्राण तो हैं ही, दिल्ली की कई प्रमुख सामाजिक, व्यावसायिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं के प्रधान तथा उपप्रधान भी हैं। आप हैप्पी स्कूल सोसाइटी के प्रधान हैं। आप चांदनी चौक ट्रेडर्स

एसोसिएशन के भी प्रधान तथा डाक्टर युद्धवीर सिंह होम्योपैथिक चैरिटेबल ट्रस्ट के महामन्त्री हैं।

आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी हैं और श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एवं टैकनीकल कालिज सोसायटी के महामन्त्री हैं। आप इतनी संस्थाओं से संबद्ध हैं कि स्वयं में ही एक संस्था बन गए हैं।

आपका परिवार दिल्ली के प्राचीन तथा प्रतिष्ठित परिवारों में से है। आपका विनम्र स्वभाव तथा जीवन प्रत्येक के लिए प्रेरणादायक है। आपकी विशेषता है कि आप अपने विचार किसी पर थोपते नहीं, अपितु धीरे-धीरे उसके लिये वातावरण तैयार करते हैं। दिल्ली के सेन्ट स्टीफंस कालेज के पुराने स्नातक होकर भी राष्ट्र भाषा हिन्दी के साथ आपका अगाध प्रेम है।

अग्रवाल समाज को उसका प्राचीन गौरव पुनः किस प्रकार प्राप्त हो इसके लिये लाला जी की तीन सूत्रीय एक दीर्घकालीन योजना चल रही है।

1. अग्रवालों के उद्गम स्थल अग्रोह के खंडहरों की खुदाई, ताकि अग्रवाल जाति और उसकी प्राचीनता के संबंध में अधिकृत पुरातात्विक तथ्य प्राप्त हो सकें। खुदाई लाला जी के प्रयास से 1978 में शुरू हुई। यह गत कई वर्षों से हरियाणा सरकार द्वारा की जा रही है। इस बार 1982 के नवम्बर में शुरू हुई खुदाई अप्रैल—1983 के अंत तक चली।
2. महाराज अग्रसेन, अग्रोहा और अग्रवाल पर व्यापक शोध कार्य अग्रवंश शोध संस्थान के अन्तर्गत जारी है, जिससे अग्रवाल जाति के प्रमाणिक इतिहास की रचना की जा सके।
3. अग्रोहा की खुदाई से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री को वहीं एक संग्रहालय बनवाकर रखने की योजना भी है, ताकि अग्रोहा जाने वाला हर अग्रवाल बन्धु, अपने पूर्वजों की थाती का जायजा ले सके।

●●●

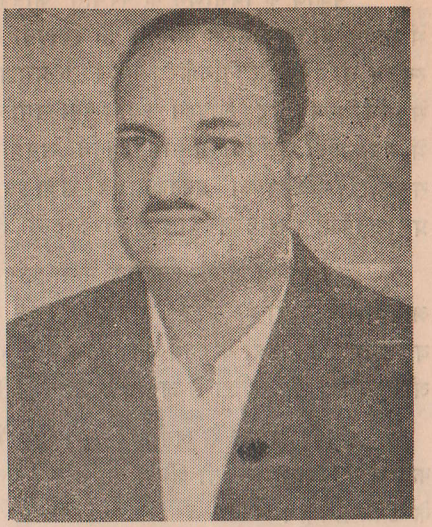

सेठ तिलकराज अग्रवाल
अग्रवाल मेटल कम्पनी, १०७, ठाकुर द्वार रोड़, बम्बई-२

सन् १९६४ में अगरोहा में अखिल भारतीय स्तर पर 'अग्रसेन-जयन्ती समारोह मनाया गया था। इस अवसर पर अग्रोहा को पुनः बसाने तथा वहाँ पर सबसे पहले एक इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना करने के लिए एक ट्रस्ट बनाने का संकल्प प्रस्ताव के रूप में पारित किया गया था। इस प्रस्ताव के प्रस्तावक आप ही थे और आप ही इसके सर्व प्रथम ट्रस्टी भी बने।

इस ट्रस्ट के लिए समर्थन प्राप्त करने के लिए आपने नटराज होटल बम्बई में एक पार्टी का आयोजना किया था। इसमें बम्बई के अनेक उद्योगपति उपस्थित थे और सभी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था।

पूर्व जीवन

आपका जन्म स्यालकोट के डसका नामक गाँव में २९ नवम्बर १९२२ को हुआ था। शिक्षा आपने आर्य हाई स्कूल, स्यालकोट में प्राप्त की। वहीं पर आपने अग्रवाल युवक समाज की स्थापना की और प्रतिवर्ष अग्रसेन जयन्ती मनाये जाने का क्रम चालू किया।

अपने दादा तथा पिता जी के कार्यों से प्रेरित होकर बाल्य काल से ही समाज सुधार के कार्यों में आपकी रुचि रही। स्वतन्त्रता संग्राम में विदेशी माल के बहिष्कार के कार्य में आपने सक्रिय सहयोग दिया।

पंजाब में पहली बार बिक्री कर लगा तो वहाँ के व्यापारियों ने आन्दोलन किया; आपने उसमें भाग लिया और जेल यात्रा भी की।

पंजाब के विभाजन के पश्चात् आपको दिल्ली आना पड़ा। यहाँ सदर बाजार में आपने अग्रवाल मेटल कम्पनी की स्थापना की। अपनी अनथक लगन के परिणाम स्वरूप आप देश के 'नानफैरस मेटल' के प्रमुख व्यापरी माने जाने लगे। आर्थिक दृष्टि से पाँव जमने पर आपका ध्यान पुनः समाज सेवा की ओर आकृष्ट हुआ। सन् ५१ में अपने चार साथियों के साथ आपने अग्रवाल सभा की स्थापना की। 'अग्रवाल समाचार' पत्रिका का प्रकाशन एवं संचालन कर अग्रवालों में एकता की भावना का प्रचार किया। आप अग्रवाल भवन के ट्रस्टी हैं।

१९६२ में आपने अग्रवाल मेटल कम्पनी की शाखा बम्बई में खोली। तब से आप बम्बई वासी हो गये हैं। वहाँ भी १९६५ में आप 'अग्रवाल सेवा समाज' के अध्यक्ष बने और उस संस्था के कार्य को सफल बना रहे हैं। आप जैसे कुशल संगठन कर्त्ता और समाजसेवी व्यक्ति से अग्रवाल समाज को बहुत आशाएं हैं।

आपके प्रयत्न से अग्रोहा में २२ कमरों की धर्मशाला बनवाई गई और आज कल आप अग्रोहा में सती शीला का मन्दिर बनवाने में व्यस्त हैं। आप इस महा सभा के उपप्रधान हैं।

० ० ०

श्री विजय कुमार गोयल
२८५, गली पुराना डाकखाना,
शाहदरा दिल्ली-३२

वरमेको गुणी पुत्रः न च मूर्ख शतान्यपि
एकश्चन्द्र तमो हन्ती न च तारागणानपि।

यदि किसी कुल में सुयोग्य पुत्र एक भी हो तो सौ मूर्ख पुत्रों से कहीं अच्छा है। जैसे एक ही चन्द्रमा अन्धकार को हर लेता है किन्तु अनेक तारागण अन्धकार को नहीं हर सकते।

उपर्युक्त लोकोक्ति के संदर्भ में जब हम नवयुवक विजय कुमार गोयल के कार्य-कलाप की एक झलक लेते हैं तो विदित होता है कि इन्होंने शाहदरा निवासी श्रीकृष्ण जी गोयल के घर में सन् १९४५ ई० में जन्म लेकर न केवल अपने व्यक्तित्व को ही

निखारा है अपितु अपने सम्पूर्ण परिवार को रोशन किया है। इनकी प्रतिभा से इनका परिवार तो लाभान्वित हुआ ही है शाहदरा के सार्वजनिक जीवन में भी एक होनहार नवयुवक की सेवाओं से विविध सार्वजनिक संस्थाओं को बल मिला है। श्री गोयल जी ने अपनी छोटी सी आयु में अपने सेवा कार्यों से अनेक सार्वजनिक संस्थाओं को आकर्षित किया है अतः आज दिन श्री गोयल जी निम्नांकित संस्थाओं से आबद्ध हैं :—

१. श्री सनातन धर्म युवक सभा के मानद मन्त्री,
२. भारत ब्लाइण्ड स्कूल, शाहदर के सहमन्त्री,
३. देहली ट्रैफिक पुलिस के ट्रैफिक वार्डन,
४. भारतीय रैडक्रास सोसाइटी शाहदरा की प्रबन्ध समिति सदस्य,
५. शाहदरा मैन्यूफैक्चरिंग एसोसियेशन के कार्यकारिणी सदस्य,
६. पेरेन्ट्स टीचर्स एसोसियेशन, मुखर्जी मैमोरियल हायर सैकण्डरी स्कूल, शाहदरा के सदस्य,
७. शाहदरा सिटीजन वैलफेयर कौन्सिल के अन्तर्गत ट्रैफिक एडवाइजरी एण्ड एक्शन कमेटी के संयोजक,
८. ट्रेफिक ऐडवाइजरी कमेटी ट्रान्स यमुना एरिया के सदस्य,
९. हिन्द कुष्ठ निवारण संघ के आजीवन सदस्य,
१०. शाहदरा की पुरानी संस्था सांस्कृतिक समाज के भू० पू० मन्त्री,

श्री गोयल जी राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी रहते हुए अपने अग्रवाल समाज को नहीं भूले, यह इनकी विशेषता है। अतः आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा पंजीकृत देहली-३२ के आजीवन सदस्य हैं और मन्त्री पद पर रह कर आप इस सभा की, तन, मन और धन से यथा शक्ति सेवा कर रहे हैं।

आप मेरठ विश्व विद्यालय के स्नातक हैं और सम्प्रति नगर पालिका नई दिल्ली में आडीटर के पद पर कार्यरत हैं। आपने अपने भाइयों को सहयोग देकर हनुमान प्रिंटर्स नाम से एक उद्योग की स्थापना कराई है।

गाजियाबाद के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री ला० जय नारायण जी अग्रवाल मालिक अग्रवाल आइल मिल्स, २० नजफगढ़ रोड नई देहली की सुपुत्री श्रीमती श्यामवती गोयल आपकी धर्मपत्नी हैं जो स्वयं भी श्री गोयल जी की भांति समाज सेविका हैं। इनके एक पुत्र और एक पुत्री इनके आंगन की शोभा हैं।

●●●

श्री लाला सीताराम गुप्त,
२६९४, चूड़ी वालान, दिल्ली-६

दनकौर (बुलन्दशदर) का कानूनगो परिवार भारत विख्यात है। इसी मंगल गोत्रीय परिवार के श्री लाला नानक चन्दजी के पुत्र सीताराम का जन्म सन् १९०७ में हुआ था। आप १२ वर्ष की आयु में ही देहली के सुप्रसिद्ध मौहल्ला चूड़ीवालान में आकर रहने लगे। मौहल्ला चूड़ीवालान समाज सेवी कार्यकर्ताओं का गढ़ रहा है। ऐसे समाज सेवी क्षेत्र में निवास होने के कारण श्री सीताराम जी बाल्यावस्था से ही सामाजिक कार्यों में रुचि लेने लगे।

आप का सम्बन्ध हैप्पी स्कूल से पुराना है अतः देहली में विशेष कर मौहल्ला चूड़ीवालान में आप लाला सीताराम जी हैप्पी स्कूल वाले नाम से जाने जाते हैं। आप वर्षों से हैप्पी स्कूल चूड़ीवालान और दरियागंज के कार्यकारिणी सदस्य हैं। आप टी० बी० कमेटी—केयर एण्ड आफ्टर केयर कमेटी—के गत तीस वर्षों से कोषाध्यक्ष हैं। सन् १९७१ से श्री सीताराम जी अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कोषाध्यक्ष हैं। आप बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल, दिल्ली के मन्त्री रह चुके हैं। इस प्रकार श्री सीताराम जी गुप्त गत ६० वर्षों से समाज सेवा के कार्यों में निष्ठापूर्वक संलग्न हैं।

जरगांव निवासी लाला रामस्वरूप जी की सुपुत्री श्रीमती केशर देवी आपकी धर्मपत्नी हैं जो एक सद्गृहस्थ महिला हैं। आपकी सन्तान में तीन सुशिक्षित पुत्र एवं दो सुशिक्षित पुत्रियां आपके परिवार के गौरव को बढ़ाने वाले हैं।

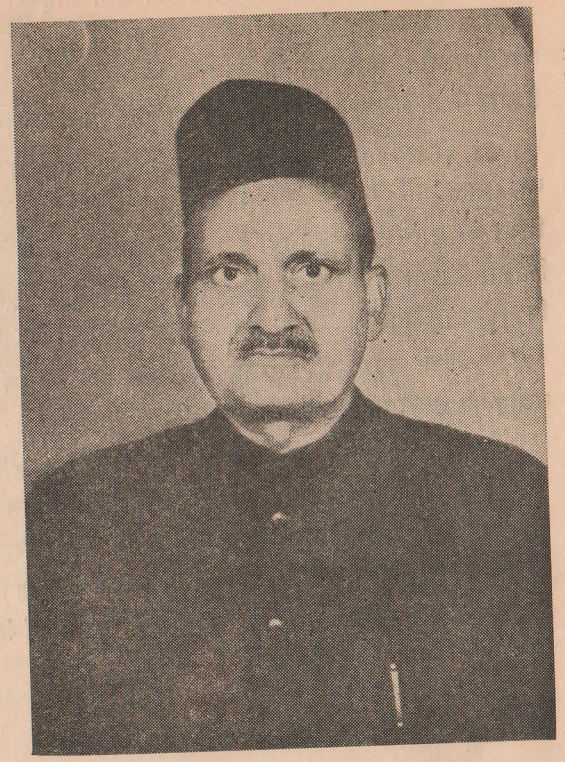

श्री प्रेमचन्द अग्रवाल
लोहे वाले,
३/४६२, बड़ा ठाकुर
द्वार,

शाहदरा दिल्ली-३२

"परमात्मा के दिये वैभव को सब में बांट कर ही उसका उपभोग करना चाहिए" इन शास्त्रीय वचनों के पालन करने वाले लाला प्रेम चन्द अग्रवाल शाहदरा में उदारमना, सनातन धर्म के पोषक और अपने सिद्धान्तों के निष्ठावान धर्म प्राण पुरुष हैं। गीता के इस उपदेश के अनुसार कि **"अनेक सिद्धान्तों से विचलित न होकर एक सिद्धान्त पर अडिग रह कर ही योग की प्राप्ति हो सकती है,"** आपने केवल सनातन धर्म के सिद्धान्तों को अपनाया है, यह इनकी स्थिर बुद्धि का द्योतक है।

"धर्मो रक्षित रक्षतः" जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। इन शास्त्रीय वचनों का पालन करते हुए श्री अग्रवाल जी प्रत्येक धार्मिक कार्यों में अपना अंश दान करते रहते हैं किन्तु धन देते समय इन्हें यह भी याद रहता है कि **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"** कर्म करना तेरा अधिकार है, फल की कामना वे नहीं करते।

अपने व्यवसाय में धनोपार्जन करते हुए श्री अग्रवाल जी को इस सिद्धान्त का भी ध्यान रहता है कि **"अपकीर्ति माननीय पुरुष के लिये मरण से भी बुरी होती है।" और सत्याचरण मानसिक शान्ति के लिए परमाइयक है** इस को अग्रवाल जी ने कसौटी पर कस लिया है।

श्री प्रेम चन्द जी अग्रवाल का जन्म शाहदरा निवासी लाला उमराव सिंह जी के घर में सम्वत् १९८६ विक्रमी में हुआ था। हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर सत्संगों और शास्त्रीय ग्रंथों के मनन से आपने आध्यात्मिक एवं भौतिक अभ्युदय प्राप्त किया है और परोपकार के आशीर्वाद से ही अग्रवाल जी का वैभव बढ़ा है।

श्री अग्रवाल जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री सुभाषचन्द जी ने एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण कर अपने पारिवारिक वातावरण के अनुरूप फलदार वृक्ष की भांति विनम्रता की शिक्षा को आत्मसात कर लिया है। अन्य सभी पुत्र पुत्रियां अनुशासनबद्ध ढंग से शिक्षित हैं। श्री अग्रवाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती राममूर्ति जी पतिपरायणा धार्मिक विचारों की सद्गृहस्थ महिला हैं जिनका आतिथ्य सत्कार भाव प्रशंसनीय है।

इनके सुपुत्र श्री सुभाष चन्द जी अपने पिताश्री के संरक्षण में गार्गी लोह उद्योग का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं।

श्री अग्रवाल जी का निम्नांकित संस्थाओं से अटूट सम्बन्ध है—

१ श्री १००८ स्वामी परमानन्द योगभक्ति वेदान्त संस्थान।
२ श्री रामलीला कमेटी भोलानाथ नगर, शाहदरा।
३ अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा (पंजीकृत) के संरक्षक।
४ आप अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा (पंजीकृत) के २२वें अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष हैं।

—: ० :—

श्री चन्द्र मोहन जैन, (सी. एम. जैन)
चार्टर्ड एकाउंटेंट
१७७, डबल स्टोरी, कबूल नगर,
जी० टी० रोड
शाहदरा दिल्ली-३२

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" कहावत के अनुसार श्री चन्द्र मोहन जी जैन अपने बाल काल से ही प्रतिभाशाली छात्र रहे हैं। आपका जन्म राजस्थान के सुप्रसिद्ध नगर जोधपुर में श्री मूल चन्द जी जैन के घर में सन् १९५१ में हुआ था। आपके पिताश्री देहली की रेलवे सेवा में होने के कारण आप १९५८ में देहली आ गये और अपनी शिक्षा दीक्षा देहली में ही पूर्ण की। श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स के छात्र के रूप में आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी० कॉम० आनर्स परीक्षा सन् १९७१ में उत्तीर्ण की और १९७५ में सी० ए० परीक्षा तथा सन् १९७७ में कम्पनी सैक्रेटरी परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

सन् १९७५ से ही आपने अपनी चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट की प्रैक्टिस देहली में प्रारम्भ कर दी थी। अपनी सत्यनिष्ठा और व्यवसाय में हर प्रकार की शुचिता एवं विनम्रशील स्वभाव के कारण शीघ्र ही अपने क्लाइन्ट्स में अपना सम्माननीय स्थान बना लिया है।

सी० ए० का कार्य बहुत ही व्यस्तता का जीवन है और उत्तरदायित्व इतना विशाल है कि थोड़ी सी चूक भी अपयश का कारण बन सकती है किन्तु अपने कार्य में पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी के बल पर आप अपने व्यस्त जीवन में से समय निकाल कर सार्वजनिक सेवा कार्यों में भी योगदान करते रहते हैं, इस कहावत के अनुसार कि "जहां चाह है वहां राह है"। अतः आप निम्नांकित संस्थाओं से विविध रूप में आबद्ध हैं :—

१. राजस्थान मित्र परिषद् के कार्यकारिणी सदस्य।
२. राजस्थान युवा मंच के कोषाध्यक्ष,
३. दिल्ली प्रदेश मारवाडी सम्मेलन के संयुक्त सचिव,
४. भारतीय रैडक्रास सोसाइटी के सदस्य और इस वर्ष आप सन् १९८३-८४ के लिये रोटरी क्लब शाहदरा के मन्त्री निर्वाचित हुये हैं।

इसी वर्ष से आप अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के मानद लेखा निरीक्षक नियुक्त हुये हैं।

श्री चन्द्रभान गुप्त, खिलौनेवाले,
९५, सर्कुलर रोड, शाहदरा दिल्ली-३२

गुणवान एवं आचरणवान एक पुत्र से ही सम्पूर्ण परिवार उसी प्रकार सुशोभित एवं विख्यात हो जाता है जैसे कि चन्दन का एक वृक्ष सम्पूर्ण वन को सुगन्धित कर देता है। राजा भोज का यह कथन श्री ला. चन्द्रभान गुप्त पर पूरी तरह चरितार्थ होता है।

आपके पिता श्री रामजीलाल जी मंगल पलवल निवासी थे। सन् १९२० में जन्मे श्री चन्द्रभानजी ने सन् १९५१ में बाबूराम गुप्ता एण्ड कम्पनी के नाम से सदर बाजार में खिलौना व्यवसाय प्रारम्भ किया। इसके माध्यम से आपने अपने परिवार तथा अपने सभी निकट सम्बन्धियों को इस व्यवसाय से लाभान्वित किया है और उन्हें इस व्यापार में बढ़ावा दिया है।

श्री चन्द्रभानु जी अपने सरल स्वभाव से उदारतापूर्वक सभी संस्थाओं को आवश्यकतानुसार आर्थिक सहयोग देकर कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते रहते हैं। विनम्र स्वभाव के मिलनसार गुप्तजी सभी भले कार्यों में सहायक मौन समाज सेवी भद्र पुरुष हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति देवी जी धार्मिक विचारों की दानदात्री सद्गृहस्थ महिला हैं। आपकी छः पुत्रियां और एक पुत्र परिवार की शोभा हैं।

यह इनके परिवार के लिये सौभाग्य की बात है कि एक सुशिक्षित परिवार में इनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुम जैन बी० एस० सी०, एल० एल० बी० भी विधि की पंडिता है। इनकी सन्तान में एक पुत्र एवं एक पुत्री इनके आंगन की शोभा हैं।

श्री जैन साहब का व्यावसायिक कार्यालय ४६४८/२१ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२ में है और शाहदरा में निवास स्थान है।

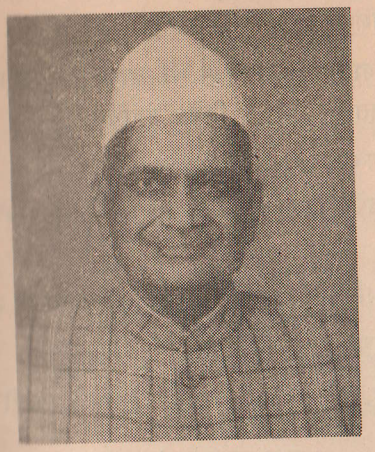

श्री भगवती प्रसाद खेतान,
खेतान भवन, ६ माला,
१९८, जमशेद जी टाटा रोड़,
चर्चगेट रिक्लेमेशन,
बम्बई-४०००२०
टेलीफोन नं.—२२१६४५/२२१५५९
तार : "खेतानसंस" बम्बई

झुंझुंनूं (राजस्थान) निवासी सेठ श्री रामकरणदास जी खेतान रामबिलासरायजी खेतान के नाम से विख्यात खेतान परिवार में आपका जन्म २४ सितम्बर १९११ ई. में हुआ। आपके पिताजी का नाम सेठ श्री मन्नालालजी खेतान, दादाजी का नाम सेठ श्री रामबिलासरायजी खेतान और पड़दादाजी का नाम सेठ श्री रामकरणदासजी खेतान था। इनका पुराना परिवार सेठ श्री रामकरणदास जी रामबिलासराय जी खेतान, झुंझुंनूं निवासी कहलाता है।

४० वर्ष की अवस्था तक अपने पूज्य पिताजी व मामाजी तथा ससुराल वालों के विभिन्न उद्योग व व्यवसाय के उच्च पदों पर रहकर विशेष महत्व के साथ सहयोग प्रदान कर प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया।

सन् १९५१ में अपने स्वयं के विस्तृत व्यवसाय को सुचारू रूप से संचालन करने हेतु आपने पोदार ग्रुप आफ आनर्स से अपने को निवृत्त कर लिया। वर्तमान में आप अपनी निम्नलिखित कम्पनियों का कार्य देखते हैं—

१. मेसर्स खेतान बिजनेस कारपोरेशन प्रा. लि. माइन ओनर, आयात व निर्यात
२. मेसर्स खेतान इंडस्ट्रीज प्रा. लि. : आर्ट सिल्क, कपड़ा रंगाई एवं प्रिंटिंग मील :
३. मेसर्स तन्ना इंजीनियरिंग प्रा. लि. : स्टील रोलिंग मील :

आज भी ७१ वर्ष की अवस्था में नाथद्वारा (उदयपुर) में स्थित अपनी सोपस्टोन डोलोमाईट की माइन का कार्य संभालते है व बाकी समय बम्बई में व्यतीत होता है। स्वास्थ्य व नैसर्गिक सुख शांति के लिए (लोनावला) सप्ताह में दो दिन रहते हैं। इसके अलावा वर्ष में १-२ बार उदयपुर, जयपुर, झुंझुंनूं, हरिद्वार की यात्रा करते हैं। ५० वर्ष की अवस्था में एक बार विदेश "जापान" की सफल यात्रा की है। अभी भी ईश्वर की कृपा से और सब लोगों के प्यार से स्वास्थ्य बहुत अच्छा चल रहा है।

अपने देश की उन्नति व देश की अर्थव्यवस्था की प्रगति हेतु इतने परिश्रम व लगन से कार्य करते हैं कि युवक भी उन्हें देखकर शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

सार्वजनिक, साँस्कृतिक, धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान है, तथा वर्तमान में आप निम्नलिखित संस्थाओं से विशेष संबंधित हैं—

१. श्री भगवती प्रसाद खेतान ट्रस्ट के संस्थापक व ट्रस्टी हैं।

(१) जीर्ण मंदिरों का पुनरुद्धार : विशेषकर झुंझुनूं (राजस्थान) श्री चावो सतीजी मन्दिर।

(२) मारवाड़ी विद्यालय, बंबई के प्राँगण में "सरस्वती मंदिर" के संस्थापक।

(३) कैवल्यधाम, लोनावला के प्रांगण में "सरस्वती मंदिर" के संस्थापक।

(४) भारतीय संस्कृति के रक्षार्थ-योग, प्राणायाम, आध्यात्म व स्वास्थ्योपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन।

२. खेतान चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई के संस्थापक व ट्रस्टी हैं।

(१) सेठ श्री मन्नालाल जी खेतान राजकीय प्राथमिक पाठशाला, गांव—राबचा, नाथद्वारा जिला—उदयपुर (राजस्थान) के संस्थापक हैं।

(२) श्रीमती सरस्वतीदेवी आयुर्वेदिक औषधालय, अन्धेरी बम्बई के संस्थापक एवं ट्रस्टी हैं।

३. श्री सेठ रामकरण दास जी खेतान लोककल्याण संस्था, बम्बई के संस्थापक व ट्रस्टी हैं।

४. श्री ठाकुरजी लक्ष्मीनाथजी ट्रस्ट, झुंझुनूं के ट्रस्टी हैं।

५. श्री चावो सतीजी ट्रस्ट, झुंझुनूं के ट्रस्टी हैं।

६. श्री आयुर्वेद प्रचार संस्था, बंबई के ट्रस्टी हैं। इसमें श्रीमती कमलादेवी गौरीदत्त मित्तल कालेज और दस आयुर्वेदिक औषधालय चल रहे हैं।

७. श्री राजस्थानी सेवा संघ, जे. बी. नगर, अंधेरी, बंबई के ट्रस्टी हैं।

८. श्री जगन्नाथ गिगराज खेमका चेरीटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं।

९. श्री बालक एजुकेशन सोसायटी, सायन, बंबई के ट्रस्टी हैं।

१०. मारवाड़ी विद्यालय, बम्बई के ट्रस्टी हैं।

११. बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, माहिम, बम्बई के ट्रस्टी व संरक्षक हैं। इस संस्था के द्वारा प्रतिवर्ष ४० हजार अहिन्दी भाषा भाषी राष्ट्रभाषा हिन्दी की परीक्षायें देकर लाभान्वित होते हैं।

१२ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष, बम्बई के अढ़ाई वर्ष तक "अध्यक्ष" रहे हैं।

१३. सार्वजनिक आयुर्वेदिक औषधालय, माटुंगा, बम्बई के सभापति ३० वर्षों से हैं।

१४. भारतीय विद्या भवन, चौपाटी, बम्बई के आजीवन सदस्य हैं।

१५. अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा (रजि.), दिल्ली के आजीवन सदस्य एवं कार्यकारिणी सदस्य हैं।

१६. अग्रवाल सेवा समाज, बम्बई के संरक्षक हैं।

१७. वर्ष १९८०-८१ में महाराष्ट्र सरकार ने स्पेशल एक्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट (विशेष निष्पादन दण्डाधिकारी की उपाधि से २ वर्ष विभूषित किया।

स्वास्थ्य, आरोग्य व क्रीड़ा हेतु निम्नलिखित संस्थाओं के मेम्बर हैं—

१. क्रिकेट क्लब आफ इण्डिया स्पोर्ट्स क्लब, बम्बई।

२. नेशनल स्पोर्ट्स क्लब।

३. डब्ल्यु. आई. ए. ए. क्लब।

४. माटुँगा जिमखाना।

५. रायल वेस्टर्न इण्डिया टर्फ क्लब।

६. मारवाड क्लब।

आध्यात्मिक, यौगिक, संस्थाओं के आजीवन सदस्य हैं—

१. दि इण्टरनेशनल सोसायटी फार कृष्णा कोंसियसनेस, हरे रामा हरे कृष्णा।

२. श्री जय गुरुदेव।

३. विपश्यना "सयाजी ऊबाखिन"।

४. कैवल्यधाम, लोनावला के गवर्निंग वाडी के मेम्बर हैं।

आप अनेक अनगिनत संस्थाओं के आजीवन मेम्बर हैं।

आपका शुभ विवाह सुविख्यात पोदार परिवार में श्री राजा रामदेव जी पोदार की सुपुत्री सौ. भगवती बाईजी के साथ संवत् १९८४ वि. (सन् १९२७ ई.) में हुआ। श्रीमती भगवती बाईजी धार्मिक एवं उदार विचारों की महिला हैं। आपकी संतान में श्री रविन्द्रप्रसाद, सौ. कुमुदबाई क्याल, सौ. राजकुमारी हरलालका, सौ. आशाबाई अग्रवाल, राजकुमार, अशोककुमार खेतान हैं, जो स्वतन्त्र रूप से अपने व्यवसाय में संलग्न हैं।

डा. इन्द्रसेन गुप्त
५३५, मन्टोला, पहाड़गंज,
नई दिल्ली-५५

सेवा ही जिनका मिशन है, ऐसे डा. इन्द्रसेन जी का जन्म वीर प्रसूता हरियाणा के सोनीपत नगर के सम्भ्रांत वैश्य परिवार में सन् १९१२ में हुआ। आपके पिता श्री मानसिंह जी सिंगर मशीन कम्पनी में प्रबन्धक के पद पर कार्य करते थे।

डा. गुप्तजी व्यवसाय से चिकित्सक हैं। आपने राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा कालेज, नागपुर से नागरिक सुरक्षा दिल्ली प्रशासन द्वारा रोगी सेवा कोर्स किए। सन् १९६५ के युद्ध काल में आपको स्टाफ आफीसर केज्युअलटी सर्विसिज, नागरिक सुरक्षा दिल्ली भी नियुक्त किया गया।

आपने बड़े परिश्रम से अपने पैतृक संस्कारों को आत्मसात किया है। आपका सम्पूर्ण जीवन समाज के पीड़ित वर्ग की सेवा में ही व्यतीत हुआ है। आप सदा ही समाज के सेवा कार्यों में अग्रणीय रहे हैं। अपने सेवा भाव के फलस्वरूप ही आप निम्नांकित सार्वजनिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से संलग्न हैं—

१. अयवाल पंचायत पहाड़गंज, २. वैश्य कोआपरेटिव कोमर्शियल बैंक, ३. श्री धार्मिक लीला कमेटी, ४. दिल्ली प्रदेश अग्रवाल सभा, ५. शिक्षा तथा विधवा सहायता कोष ट्रस्ट, ६. के. के. गुप्त धार्मिक चेरिटेबुल ट्रस्ट, ७. स्टाफ आफीसर केज्युअल्टी सर्विसिज, दिल्ली, ८. अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा, दिल्ली।

इनके अतिरिक्त आप अपनी तरफ से प्रति वर्ष सेन्ट जान एम्बुलेंस (फर्स्ट एड) दिल्ली के विशिष्ट कार्यकर्ता को एक स्वर्ण पदक देते हैं।

बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल दिल्ली ने आपको "चौधरी" का खिताब देकर सम्मानित किया है।

आपके पाँच सुपुत्र एवं एक पुत्री आपके परिवार की शोभा हैं। सभी पुत्र अपने समृद्ध उद्योगों में कार्यरत हैं।

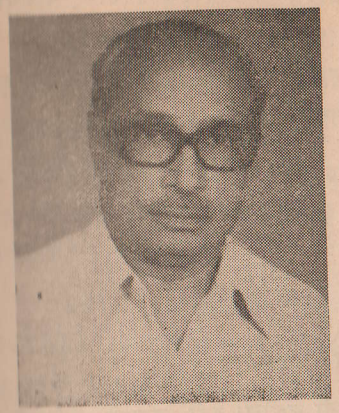

श्री रमेशचन्द गुप्त
सी-१८१, विवेक विहार, देहली-३२
दूरभाष २०००११

उर्दू के शायर जौक ने जब लखनऊ नवाब का निमन्त्रण ठुकराते हुए गुनगुनाया था कि "कौन जाये ज़ौक अब दिल्ली की गलियाँ छोड़कर" तो इन पंक्तियों में एक सार छिपा था। ऐसी ही दिल्ली की गलियों में मौहल्ला चूड़ीवालन की गलियों का विशेष स्थान रहा है। यह मौहल्ला दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपतियों की जन्म भूमि रहा है। सलमेवाला, खिलौनेवाला, हाथी दांतवाला, कलजुगिया, धनकुवेर आदि परिवारों के नाम विशेष रूप से इस मौहल्ले के साथ जुड़े हैं। सन् १९२० में इस मौहल्ले की ख्याति से प्रभावित होकर उत्तर प्रदेश से आकर एक परिवार यहाँ आकर बसा और बिजली वालों के नाम से प्रख्यात हुआ। इस परिवार के मुखिया हैं श्री लाला राम गोपाल जी गुप्ता।

श्री राम गोपाल जी बिजली वालों के घर में बालक रमेश चन्द का जन्म १ जून सन् १९२८ को हुआ। बालक रमेश चन्द बचपन से ही प्रतिभा सम्पन्न थे। अपनी शिक्षा पूरी करके आपने यूनिवर्सल रेडियो कम्पनी में सन् १९४३ में कार्य आरम्भ किया और अपनी ईमानदारी, लगन, और निष्ठावान कार्यकर्ता के नाते आज दिन आप इस संस्थान में महाप्रवन्धक के पद पर विराजमान हैं।

श्री रमेश चन्द जी सामाजिक क्षेत्र में भी एक लगनशील एवं उत्साही कार्यकर्ता हैं। समाज सेवा की इस रुचि के फलस्वरूप भारत सेवक समाज तथा "केयर एण्ड आफ़्टर केयर" कमेटी से आपका विशेष लगाव रहा है। अपनी आजीविका के कार्य के अतिरिक्त आप अवकाश का पूरा उपयोग समाज सेवा के कार्यों में ही करते हैं।

सन् १९७५ में आपने विवेक विहार में अपनी निजी कोठी बना ली थी, अतः अब इनका सेवा क्षेत्र देहली के साथ-साथ यमुना पार क्षेत्र में विस्तार पा चुका है। सम्प्रति आप विवेक विहार अग्रवाल सभा के महामन्त्री हैं। आपके विशेष प्रयत्न से

आज कल विवेक विहार अग्रवाल सभा महाराजा अग्रसेन मन्दिर की निर्माण योजना को पूरा करने में तत्पर हैं।

आप आज दिन निम्नांकित सार्वजनिक संस्थाओं में भी निष्ठावान कार्यकर्ता हैं। समाज सेवा के पुनीत कार्य में किसी राजनीतिक दल की विचारधारा आपका मार्ग अवरुद्ध नहीं करती।

- अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा
- दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन
- विवेक विहार सनातन धर्म सभा,
- अग्रवाल पंचायत, मौहल्ला बदलियान
- बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल, दिल्ली (पंजीकृत)

देहली के लाला अमरनाथ की सुपुत्री श्रीमती सुशीला देवी आपकी धर्मपत्नी हैं जो एक सद्गृहस्थ महिला हैं। आपकी सन्तान में दो पुत्र तथा तीन पुत्रियां गृह की शोभा हैं।

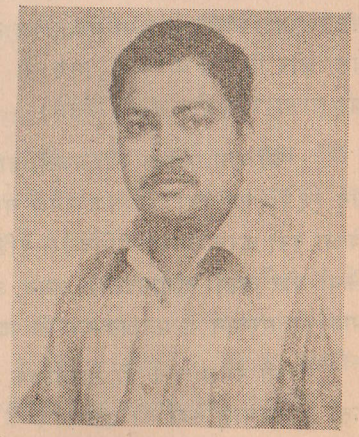

श्री चन्द्र मोहन गुप्त,
चन्द्रा पेपर मार्ट
४४२१, नई सड़क, दिल्ली-६

अग्रोहा तीर्थ के सम्पादक एवं संचालक के नाते श्री चन्द्रमोहन जी गुप्त अब तक अनेक समाज सेवियों और समाज की प्रतिष्ठित विभूतियों को अपनी पत्रिका में प्रकाशित कर चुके हैं, आज वे प्रथम बार स्वयं प्रकाशित हो रहे हैं। यह संयोग की ही बात है कि ग्वालियर (म. प्र.) के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में जन्मे श्री चन्द्र मोहन जी को वैश्य रत्न, अग्रवाल समाज में जागृति के पितामह, देहली की विभूति मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल का दत्तक पुत्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

श्री अग्रवाल जी के सेवा क्षेत्र को सुरभित करने और उनकी कीर्ति को चमकाने की दिशा में श्री चन्द्र मोहन जी का प्रयास सराहनीय है। इन्होंने मास्टर जी द्वारा संस्थापित अग्रोहा तीर्थ को नया रूप देकर अपनी प्रखर सम्पादन कला का परिचय दिया है।

श्री गुप्तजी ने मास्टर जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का बीड़ा उठाया है अतः बड़ी लगन से "अग्रोहा स्मृति ग्रन्थ" का सम्पादन कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि श्री चन्द्र मोहन जी अपने प्रयास में न केवल सफल होंगे, अपितु समाज को एक नवीन दिशा प्रदान करेंगे।

आप १९६८ में देहली आये और सम्प्रति कागज का थोक व्यापार करते हैं। अपने व्यापारिक कार्य से समय निकालकर आप निम्नांकित सार्वजनिक संस्थाओं को अपना योगदान दे रहे हैं—

१. भारत कोआपरेटिव ग्रुप हाउसिंग सोसाइटी लि. के उप प्रधान,
२. देहली प्रदेश अग्रवाल सभा के मन्त्री,
३. दी वैश्य कोआपरेटिव कोमर्शियल बैंक लि. के सहमन्त्री,
४. शिक्षा तथा विधवा सहायता कोष ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष,
५. अग्रवाल भवन ट्रस्ट के ट्रस्टी,
६. श्री हनुमान मन्दिर कमेटी के ट्रस्टी,
७. अग्रोहा तीर्थ एवं अग्रोहा स्मृति ग्रन्थ के सम्पादक
८. बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल के कर्मठ सदस्य।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विजयरानी, एम. ए. आपके सेवा कार्यों में योगदान करती रहती हैं। आपके एक पुत्र तथा दो पुत्रियाँ गृह की शोभा हैं।

श्री गुप्त जी दूसरों के लिए कुछ करने के लिए सदैव अग्रसर रहते हैं और यही सेवा भाव इन्हें समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिलाता जा रहा है।

●●●

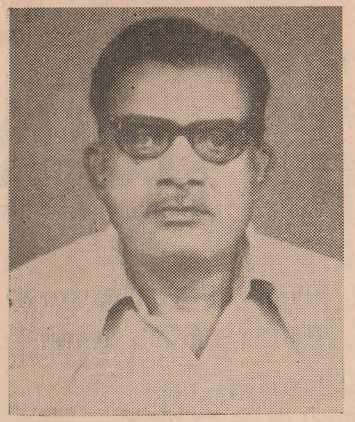

श्री मदनसेन गुप्त
एन.-१६४, आर. एस. ब्लाक,
भोलानाथ नगर, शाहदरा दिल्ली-३२

मेरठ जनपद के अन्तर्गत अमीनगर सराय, अग्रवाल व्यापारियों का गढ़ रहा है। उसी नगर के विभूति, श्री मुख्तार सिंह जी मित्तल के सुपुत्र सन् १६२८ में जन्मे श्री मदनसैन जी गुप्त पुरानी पीढ़ी के मुख्य अध्यापकों में से हैं जो गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार अपने छात्रों को पुत्रवत् मान कर शिक्षा द्वारा उनका निर्माण करते आ रहे हैं। श्री गुप्त जी की यह विशेषता है कि आज के भौतिकवादी युग में भी अपने छात्रों का हित और उनकी आवश्यकताओं के प्रति बिना भेदभाव निःस्वार्थ हित चिन्तना इनके दैनिक कार्यक्रम का अंग है। अभावग्रस्त छात्रों के लिए दानियों को प्रोत्साहित कर छात्रों के अभाव की पूर्ति कराने की कला में श्री गुप्त जी सिद्धहस्त हैं। और यह सब इनके आत्मबल और अटल विश्वास के कारण ही सम्भव हुआ है।

अध्यापक स्वभाव से ही देश निर्माताओं की श्रेणी में आते हैं। किन्तु श्री मदन सैन जी अपने इस पद की गरिमा के लिए शिक्षा कार्य के साथ समाज निर्माण के कार्य में भी विश्वास करते हैं। इसीलिए आप शाहदरा के सार्वजनिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते रहे हैं। चाहे मौहल्ला सुधार कमेटी हो चाहे धार्मिक कार्य हो श्री गुप्तजी सेवा कार्यों में अग्रिम पंक्ति में देखे जाते हैं। सांस्कृतिक कार्यों, पी. टी. ए. के कार्यों में तथा स्काउटिंग आदि के कार्य में श्री मदन सेन जी की सेवाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। साथ ही आपने अपने समाज को भी नहीं भुलाया है। वे अग्रवाल समाज के कार्यों के साथ भी मनोयोगपूर्वक जुड़े हुए हैं। सम्प्रति आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के क्रियाशील आजीवन सदस्य हैं।

शाहदरा निवासी श्री ला. आशारामजी की सुपुत्री श्रीमती शान्ति देवी जी आपकी धर्मपत्नी हैं जो शिक्षित एवं धार्मिक विचारों की भद्र महिला हैं। आपके सात पुत्रियाँ एवं दो पुत्र हैं जिनमें से एक पुत्र तथा ५ पुत्रियां विवाहित हैं। इनका अनुशासन बद्ध परिवार किसी भी परिवार के लिए अनुकरणीय हैं।

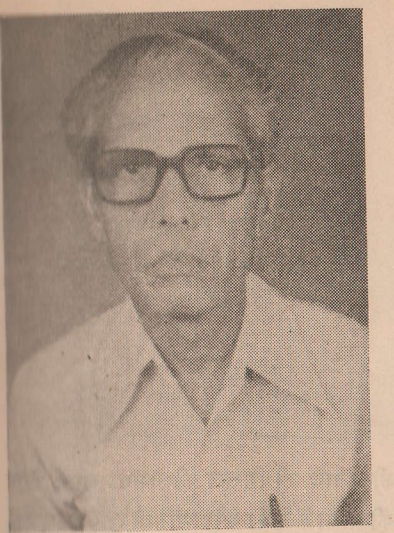

श्री राम वीर सिंहल,
६३७, बेगम बाग, अलीगढ़

प्रायः यह देखा गया है कि पुत्र की ख्याति पिता के कारण होती है किन्तु वह परिवार और भी सौभाग्यशाली हैं जिनमें पुत्र के पद के कारण पिता का सम्मान बढ़ जाता है। दैवयोग से श्री लाला हीरा लाल जी सिंहल के परिवार में पुत्र की उन्नति ने इनके परिवार के यश में वृद्धि की है और श्री हीरा लाल जी का सम्मान बढ़ा है।

बालक राम वीर का जन्म १६२५ ई० में श्री लाला हीरा लाल जी सिंहल के घर में हुआ। नवजात शिशु में होनहार बालक के चिह्न दृष्टिगोचर हुए। समय की गति के साथ इनका विकास होता गया और अपनी शिक्षा पूरी करके आप पी. एंड. टी. स्टोर, अलीगढ़ की सेवा में लग गये और वहां आप प्रबन्धक के पद पर पहुँच गये। सरकारी सेवा में रहते हुए आपने इतनी ख्याति प्राप्त की कि भारत मजदूर संघ के आप प्रधान बने।

आपने अपने निज प्रयास से निम्नांकित व्यापारिक संस्थानों की स्थापना की है :—

१. भारत मैडिको २. न्यूडेली नीड्स सेंटर, ३. सिंहल फ्लोर मिल्स,

श्री सिंहल जी ने अपने जीवन काल में बचपन से ही समाज सेवा का सहारा लिया है और सेवा के अंकुर आज दिन समाज सेवा के विस्तृत क्षेत्र में अपनी जडें फैला चुके हैं।

आप अग्रवाल सभा, बेगम बाग के मन्त्री हैं और अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं।

मेरठ निवासी श्री छोटेलाल जी अग्रवाल की पुत्री श्रीमती विद्यावती सिंहल आपकी धर्मपत्नी हैं। आपके तीन पुत्र और दो पुत्रिया उच्च शिक्षा प्राप्त हैं अतः यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि आपके पुत्र आपके परिवार की गरिमा को और आगे ले जायेंगे।

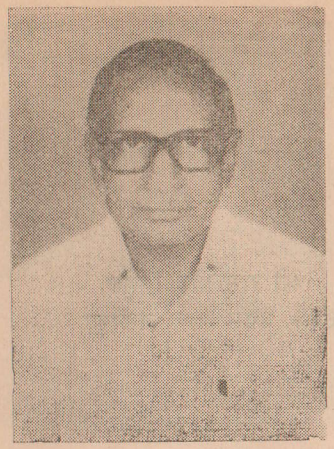

रायजादा सांवल दास गुप्त,
माडर्न सिण्डकेट प्रिन्टर्स,
११३८, मेन बाजार,
पहाडगंज, नई दिल्ली-५५

देहली के सुप्रसिद्ध रायबहादुर श्री जानकी प्रसाद जी मित्तल की गणना अपने क्षेत्र में जाने माने व्यक्तियों में की जाती है। इनकी समाज सेवा और दानवीरता से प्रभावित होकर सरकार ने इन्हें राय बहादुरी के खिताब से सम्मानित किया था। आपकी समाज में विशिष्ट स्थिति है। समाज सेवा की वंश परम्परा में श्री मित्तल जी का परिवार सदैव अग्रणी रहा।

राय बहादुर जानकी प्रसाद जी मित्तल के एक मात्र पुत्र सांवल दास भी पैतृक संस्कारों के कारण अपने पिताश्री के पद चिन्हों पर चलते हुये रायजादा सांवल दास नाम से प्रसिद्ध हो गये और अपने पैतृक गुणों के प्रभाव से आज दिन इनकी गणना भी गरीबों के मददगार और सेवा भावी व्यक्तियों में की जाती है।

आप सन् १९६५ से अपने प्रिंटिंग प्रेस का संचालन बड़ी कुशलतापूर्वक कर रहे हैं। इनके तीन पुत्र भी इसी व्यवसाय से सम्बद्ध हैं। इनके एक पुत्र ऐडवोकेट हैं और एक चार्टर्ड एकाउन्टेंट हैं जो निजी व्यवसाय में संलग्न हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकला गुप्ता भी सेवाभावी सहृद महिला हैं। श्री सांवल दास जी अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्यकारिणी सदस्य है और कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

सेठ ओम प्रकाश गर्ग लौहारी वाले
के-४३, नवीन शाहदरा
दिल्ली-३२

दिल्ली के तिलक बाजार में "गिरिलाल ओम प्रकाश" नाम से सुविख्यात गद्दी के भागीदार सेठ ओम प्रकाश गर्ग नवीन शाहदरा की शोभा हैं। आप अपनी उदारता और पड़ौसी के प्रति प्रेम भाव के कारण अपने मौहल्ले में पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं।

श्री अग्रवाल जी अपने व्यवसाय में संलग्न रहने के कारण सामाजिक कार्यों के लिए समय तो बहुत नहीं दे सकते किन्तु देहली और शाहदरा की ऐसी कोई संस्था नहीं जिसे श्री गर्ग जी का आर्थिक सहयोग न मिला हो। जो इनके सम्पर्क में आया निराभिमानी श्री गर्ग जी ने उस पर अपनी उदारता और सहयोग की छाप छोड़ी है।

लौहारी कस्बा जिला मेरठ निवासी ला० श्री राम स्वरूप जी अग्रवाल के घर में सन् १९३४ में जन्मे श्री ओम प्रकाश जी अपनी स्कूली शिक्षा अपने व्यापार के लिये प्राप्त कर सन् १९५१ में देहली आये और अपने पुरुषार्थ से सम्बत्१९५९ में गिरी लाल ओम प्रकाश नाम से देहली में आढ़त की गद्दी स्थापित की और अपने कार्य में प्रभूत सफलता प्राप्त की है।

आप अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के उपाश्रयदाता सदस्य हैं और समय समय पर इस महा सभा के प्रत्येक कार्य मे आपका आर्थिक सहयोग मिलता रहता है। इस बार इस महा सभा के २२वें अधिवेशन के आप उद्घाटनकर्ता हैं।

पुंडरी निवासी श्री गौतम मुनि की सुपुत्री श्रीमति विमला देवी आपकी सद्गृहस्थ धर्मपत्नी हैं। आयु० सन्तोष, मुनीश, उषा, तथा नवीन कुमार आपकी सुयोग्य सन्तान हैं।

आप राजनीतिक विचारों से कांग्रेस के प्रबल समर्थक और पोषक हैं।

●●●

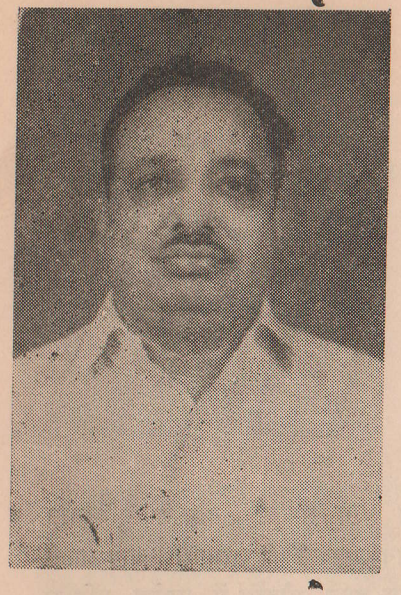

सेठ जयभगवान गर्ग
सर्वश्री गिरिलाल ओमप्रकाश अग्रवाल
२०३, तिलक बाजार, देहली-६

एकेनापि सुपुत्रेण पवित्र गुण शालिना ।
सुरभि क्रियते गोत्रं चन्दने नेव काननम् ।।

गुणवान एवं आचरणवान एक पुत्र से ही सम्पूर्ण परिवार उसी प्रकार सुशोभित एवं विख्यात हो जाता है जैसे चन्दन का एक वृक्ष सम्पूर्ण वन को सुगन्धित कर देता है।

राजाभोज का उपर्युक्त वचन श्री जयभगवान जी गर्ग पर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होता है। आपने अपनी व्यापारिक प्रतिभा, लगन, कठोर परिश्रम, सदाचरण एवं दानवृत्ति के बल पर अपने परिवार को तो ऊंचा उठाया ही है, अपने सभी सम्बन्धियों के लिए उन्नति के द्वार खोले हैं।

आपका जन्म २८ नवम्बर १९३८ ई० में श्री ला० गिरिलाल जी गर्ग के घर लोहारी (मेरठ) में हुआ था। आप अपनी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर १० वर्ष की आयु में ही देहली आ गए और अपनी सूझ-बूझ और लगन से सन् १९५९ ई० में २०३ तिलक बाजार, देहली-६ में सर्वश्री गिरिलाल ओमप्रकाश अग्रवाल के नाम से आढ़त की गद्दी स्थापित की।

गत वर्षों में आपके पुत्र श्री शिवकुमार जी ने शिव मैटल इंडस्ट्रीज, ४२१, फ्रेंड्स कालोनी, शाहदरा में एक उद्योगशाला की स्थापना करके समृद्धि के नये स्रोत खोले हैं। सेठ जी की धर्मपत्नी श्रीमती माया देवी पतिपरायणा एवं धार्मिक विचारों की महिला हैं। इनके तीन पुत्र तथा तीन पुत्रियां कुल की शोभा हैं। इनके पिताश्री गिरीलाल जी ग्राम पंचायत के प्रधान रहे हैं और कन्या पाठशाला, लोहारी (मेरठ) इनका कीर्तिमान है।

सरल स्वभाव के एवं दानशील सेठ जय भगवान जी धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं में अपना क्रियात्मक योगदान देते रहते हैं। आप सनातन धर्म सभा तथा आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं को मुक्त हस्त से दान देकर संरक्षण देते रहते हैं। दान की इसी श्रृंखला में "महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल समाज" पुस्तक का अष्टम संस्करण इनके आर्थिक सहयोग से प्रकाशित हुआ है। आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य एवं कार्यकारिणी सदस्य हैं। □

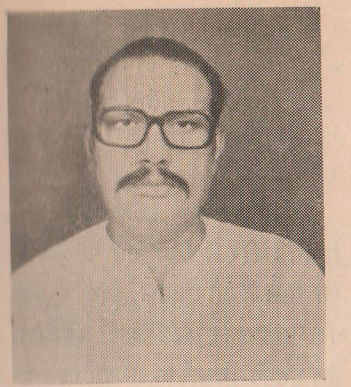

श्री हेम चन्द जैन
१/६-बी, ज्वालानगर,
शाहदरा दिल्ली-३२

तप, त्याग और अहिंसा जैन धर्म के तीन रत्न हैं और जो व्यक्ति इन रत्नों की माला को धारण कर लेता है वह अजातशत्रु बन जाता है। जब हम इस कसौटी पर श्री हेम चन्द जी जैन को परखते हैं तो लगता है कि समाज के सेवा क्षेत्र में अग्रणी और निर्विरोध उच्च पदों पर इनका चयन इनके गुणों के कारण ही सम्भव हुआ है। परोपकारार्थ समाज के सभी कार्यों में उदारतापूर्वक दान देने की कामना के कारण प्रत्येक कार्यकर्ता के लिये आपके द्वार खुले हैं।

सिंहल गोत्रीय जैनधर्म के भूषण श्री मथुरा प्रसाद जी के पुत्र रत्न हेमचन्द का जन्म सन् १९३८ में हुआ और समय के साथ बालक हेम चन्द ने कालेज में दो वर्ष पूरे कर अपनी पढ़ाई छोड़कर अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया। आज दिन आपका विस्तृत कारोबार कटरा हरदयाल, दिल्ली में विशेष रूप से कपड़े का है।

अपने व्यस्त कारोबार से समय निकालकर आप समाज सेवा के कार्यों में भी अपना योगदान करते रहते हैं। आप बहुत समय से श्री रामलीला कमेटी, शाहदरा के प्रधान हैं और अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के सक्रिय आजीवन सदस्य एवं कार्य-कारिणी समिति के स्थायी विशिष्ट आमन्त्रित सदस्य और ब्लाक कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष हैं। और दिल्ली कटरा हरदयाल कमेटी ने आपको प्रधान पद पर प्रतिष्ठित किया हुआ है।

धर्मप्राण श्रीमती दयावती जी जैन आपकी धर्मपत्नी हैं और आपके एक पुत्री एवं चार पुत्र आयु० मिथिलेश जैन, मुकेश कुमार, राजेश कुमार, व्रज मोहन, एवं नवल किशोर सभी विद्या व्यसनी हैं और अनुशासित परिवार की शोभा हैं।

—: ० :—

श्री भगवत स्वरूप गोयल,
४/७१, भोलानाथ नगर,
शाहदरा दिल्ली-३२
भगवत टॉय उद्योग
२७७७, प्रताप मार्किट,
सदर बाजार, देहली-६

●

श्री भगवत स्वरूप जी गोयल के ठिगने शरीर में स्थिर एवं परिस्कृति बुद्धि का वास है और इनके हृदय में कर्म, ज्ञान और परोपकार की त्रिवेणी प्रवाहित रहती है। इनकी विचारधारा का प्रबल स्रोत मानस की निम्नांकित पंक्तियां हैं—

सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जिहि न मोह माया प्रबल।
असि विचार मन माहिं, भजौ सदा सीतारमन॥

श्री गोयल जी बैठते-उठते, चलते-फिरते तथा बातचीत में प्रसंग वश मानस की पंक्तियां मधुर कंठ से जब गुनगनाते हैं तो लगता है कि आपने रामायण को हृदयंगम कर लिया है यह सोच कर कि—

रामायण यह रुचिर है, नव रत्नन की माल।
जे उर धारहिं, ते लहें, शोभा परम विशाल॥

राम भक्त होने के कारण आपको रामलीला से विशेष लगाव है।

हरियाणा की वीर प्रसूता भूमि की रज में पले श्री गोयल जी में ज्ञान के साथ क्षात्र धर्म भी प्रस्फुटित हो जाता है। आपका जन्म सन् १९३३ में श्री रामजीलाल गोयल के घर में हुआ। आपने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सन् १९६६ में भगवत टॉय उद्योग की स्थापना की। आपका खिलौनों का व्यापार २७७७, प्रताप मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली में है। आप इस व्यवसाय में जाने माने व्यापारी हैं अतः आप प्रताप व्यापार मंडल के प्रधान हैं।

आपकी रुचि गरीब परिवार की कन्याओं के विवाह हेतु आर्थिक सहायता देने तथा आर्थिक रूप से असमर्थ छात्रों को छात्रवृत्ति देने में है।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती स्वयं भी दानशील और उदार विचारों की महिला हैं। आपकी सन्तान में दो सुशिक्षित पुत्र अपने पिताश्री के साथ व्यापार में संलग्न हैं।

आप प्रति दिन रामायण का पाठ यह विचार कर करते हैं कि—

जो चाहे भववारधिहिं, तरन बिनहिं श्रम चित्त।
तौ तुलसी रामायणहिं, हित कर बांचहिं नित्त॥

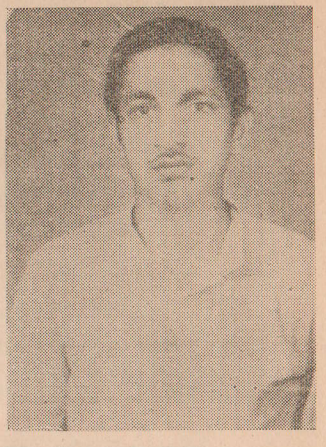

श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त,
१९०/६ मौहल्ला डूँगर, फर्श बाजार
शाहदरा दिल्ली-३२

शाहदरा में अग्रवाल नवयुवक सभा एक जीवित जागृत संस्था है और नवयुवक समाजसेवी श्री देवेन्द्र कुमार जी गुप्त इस सभा के प्रधान हैं। आप इस संगठन के विकास में तन-मन धन से जुटे हुए हैं। अग्रवाल नवयुवक सभा को ही यह गौरव प्राप्त है कि इसने शाहदरा में सर्वप्रथम श्री अग्रसेन जयन्ती का पुनरुद्धार किया और अब प्रतिवर्ष महाराजा अग्रेसन जी की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है।

श्री मुरारी लाल जी के सुपुत्र श्री देवेन्द्रकुमार जी का जन्म सन् १९५१ में हुआ था। आपने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के पश्चात अपने सुप्रसिद्ध पैतृक व्यापारिक संस्थान सर्वश्री मुरारीलाल महेन्द्रकुमार, अनाज मंडी, शाहदरा का कारोबार संभाला और अपने भाइयों के सहयोग से आज दिन इसे पूरी सफलता के साथ संचालित कर रहे हैं।

निज व्यवसाय के साथ-साथ आपकी गद्दी सार्वजनिक गतिविधियों का भी केन्द्र है। आपका सम्बन्ध सनातन धर्मसभा, शाहदरा से है और अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं। आप सनातन धर्म सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, शाहदरा के उपप्रबन्धक हैं और शिक्षा के क्षेत्र में गहरी रुचि लेते हैं।

हापुड़ निवासी श्री जगदीश प्रसाद जी की सुपुत्री श्रीमती इन्द्रा रानी श्री देवेन्द्र कुमार जी की धर्मपत्नी हैं जिनकी शिक्षा आर्य समाज के वातावरण में हुई है। अतः वे भी समाज के कार्यों में रुचि लेती हैं। आपकी चार पुत्रियां माता पिता की दुलारी हैं।

व्यापारिक संस्थान—
सर्वश्री मुरारीलाल महेन्द्रकुमार
३८३, अनाज मंडी, शाहदरा दिल्ली-३२
फोन : २०५१३३

श्री राजेन्द्र प्रकाश गोयल,
अग्रवाल स्पोर्ट्स,
६२, बड़ा बाजार, शाहदरा, दिल्ली-३२

शाहदरा में मौन रहकर समाज सेवा में अहर्निश कार्यरत, पद की होड और लालसा से मुक्त रहकर श्री गोयल जी नवयुवकों की प्रेरणा के स्रोत हैं। शाहदरा और आस पास के क्षेत्र में ऐसा कोई सार्वजनिक कार्य नहीं होता जिसके पीछे श्री गोयलजी का समर्थन न रहता हो। आपके समर्थकों की एक लम्बी कड़ी इनकी एक आवाज पर कटिबद्ध रहती है। सादा जीवन और उच्च विचार इनकी दिनचर्या है।

श्री गोयल जी की दूरदर्शिता इनके चरित्र की एक और विशेषता है। अपनी सूझ बूझ के बल पर आपने खेल सामग्री का व्यवसाय चुना जिसका सीधा सम्बन्ध नवयुवकों से है। आपने अपने पैतृक व्यवसाय से आगे बढ़कर अपने स्पोर्ट्स गुड्स का जो व्यवसाय प्रारम्भ किया उसमें अपने प्रभाव, मधुर स्वभाव एवं नवयुवकों तथा बालकों के प्रति स्नेह भाव के सद्गुण ने इन्हें प्रभूत सफलता प्रदान की है।

आपने "महाराजा अग्रसेन स्पोर्ट्स क्लब" की स्थापना कर अग्रवाल समाज के प्रति अटूट श्रद्धा का परिचय दिया है।

समाज के पीड़ित, प्रताड़ित, अभावग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करना और बिना किसी प्रदर्शन के, इनका स्वभाव बन गया है।

शाहदरा में अपने घी के व्यापार में ईमानदारी के लिये जाने माने श्री ईश्वर दयाल जी गोयल के सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रकाश का जन्म १९५४ में हुआ और पैतृक शुचिता के संस्कारों में पले श्री गोयल ने अपने परिवार को आगे बढ़ाने में अपना योगदान किया है। अनेक पत्र पत्रिकाओं तथा साहित्य का संरक्षण आपकी विशेष रुचि का कार्य है।

सौभाग्य से शाहदरा निवासी श्री वेदप्रकाश जी की सुपुत्री श्रीमती रेखा, बी. ए. आपकी धर्मपत्नी हैं और आपकी अनुगामिनी हैं। एक शिशु इनके आंगन की शोभा है।

●●●

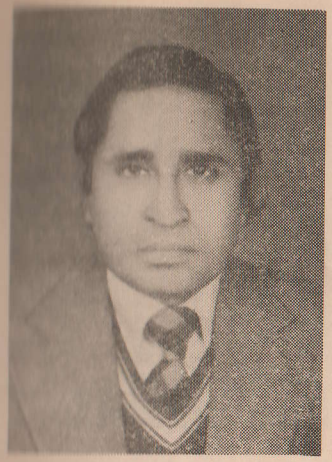

रणजीत सिंह गुप्त 'किंकर'
३/२१६ मौ० गंगाराम, छोटा बाजार
शाहदरा-दिल्ली-३२

श्री रणजीत सिंह गुप्त "किंकर" का जीवन अध्ययन, काव्य गोष्ठी और समाज सेवा की त्रिवेणी का एक अद्भुत संगम है। आप एक ख्याति लब्ध अध्यापक हैं और जब काव्य गोष्ठियों में किंकर जी का काव्य प्रवाहित होता है तो एक अनोखा समां बंध जाता है। समाज सेवा के प्रति तो वे समर्पित ही हैं। अतः आपका स्थान समाज के नेतृत्व वर्ग में है।

रणजीत सिंह जी गुप्त का जन्म २१-१२-१९४४ को शाहदरा के वैश्य परिवार में हुआ। आपने अपने जीवन की प्रारम्भिक शिक्षा शाहदरा में प्राप्त कर मेरठ यूनीवर्सिटी से एम० ए० पोल० साइंस व एम० ए० सोसियोलोजी तथा बी० एड० की शिक्षा प्राप्त की। आपका सम्बन्ध साहित्य जगत से जुड़ा है। आपकी प्रतिभा एक कवि के रूप में उभर कर सामने आयी है। आपकी कविताएं "मैं कौन हूं इस प्रश्न पर मैं मौन हूं," "देखो कौन है देश को कमजोर करता है, पकड़ो जो ऐसा करने में नहीं डरता है" तथा "दिल्ली के रहनुमा देख तेरी दिल्ली में क्या हो रहा है" राजधानी में धूम मचा रही है। आप राजधानी के एक लोकप्रिय कवि हैं। आप अपनी प्रतिभा तथा शिक्षा के कारण सनातन धर्म सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल के उपप्रधानाचार्य पद पर आसीन किये गये हैं। जहाँ तक समाज सेवा का प्रश्न है आप अग्रवाल नवयुवक सभा—शाहदरा के संस्थापकों में से हैं तथा इस सभा के प्रधान के रूप में कार्य कर चुके हैं। आपने गरीब लोगों की सहायता करने तथा अन्य सामाजिक कार्यों में भी दिलचस्पी दिखाई है। आप ईमानदार सबल तथा मधुरवाणी से लोगों को मन्त्र मुग्ध करने की क्षमता रखते हैं।

आप दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन महामना मण्डल की काव्य तरंगणी प्रशाखा के संयोजक है तथा जी०ए० स्कूल संघ, दिल्ली की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आपने ईमानदारी, दूसरों की सहायता करना, दृढ़ विश्वास से कार्य करना, आदि गुणों को अपने पिता स्व० लाला रामगोपाल जी (जावली वालों) से विरासत में प्राप्त किये हैं।

श्री नरेश चन्द्र गुप्त
३८०/२ पठानपुरा, शाहदरा देहली-३२

नरेश चन्द्र अग्रवाल का जन्म शाहदरा दिल्ली में श्री बालमुकन्द अग्रवाल मंडौला, जिला मेरठ निवासी के यहाँ सन् १९५० में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा शाहदरा में ही प्राप्त की। स्नातक तथा स्नातकोत्तर शिक्षा आपने गाजियाबाद के M. M. H. Collage से प्राप्त कर M. Com. किया।

वास्तव में आपका सामाजिक जीवन बाल्यकाल से ही प्रारम्भ हो गया था। जब आप मात्र ११ वर्ष के ही थे तब ही आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता बनकर समाज सेवा के कार्य में जुट गये। आप कालेज जीवन में भी छात्रों के अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए आवाज उठाते रहे।

अग्रवाल नवयुवक सभा, शाहदरा की सन् १९७२ में स्थापना के साथ ही आप सक्रिय सदस्य बने और अग्रवाल समाज की तन-मन-धन से सेवा में रत हो गये शाहदरा अग्रवाल नवयुवक समाज के आप हृदय सम्राट है। अग्रवाल नवयुवक सभा ने सन् १९७६ में आपको सचिव चुना तथा तब से आप ही निरन्तर सचिव पद पर शोभायमान हैं। आपके ही निरन्तर प्रयत्नों तथा सेवाओं के कारण अग्रवाल नवयुवक सभा, शाहदरा एक जीवन्त संस्था बन गई जो कि अग्रवाल समाज में व्याप्त कुरीति निवारण हेतु रचनात्मक कार्य करने के लिये प्रसिद्ध है।

आपने अग्रवाल नवयुवक सभा के साथ-साथ नवयुवक प्रगति मंच के सचिव पद पर रहकर अनेक प्रगतिशील, सांस्कृति, तथा धार्मिक कार्यों का संचालन किया है।

आप अपने सरल स्वभाव, उदारवृति व प्रगतिशील विचारों के कारण निम्नांकित संस्थाओं से सम्बद्ध हैं :—

- अग्रवाल नवयुवक सभा, शाहदरा के सचिव,
- नवयुवक प्रगति मंच, शाहदरा के सचिव,
- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, शाहदरा के कार्यकारिणी सदस्य,
- नागरिक कल्याण परिषद, शाहदरा के कार्यकारिणी सदस्य,
- अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के प्रतिनिधि सदस्य,
- अखिल भारतीय अग्रवाल युवा संगठन के प्रतिनिधि सदस्य,
- अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा(पंजीकृत) के कार्यकारिणी सदस्य,
- दिल्ली स्टडी ग्रुप के सदस्य, ,,
- भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली के ब्लाक प्रधान,
- दिल्ली रामनौमी समिति, शाहदरा के संयोजक।

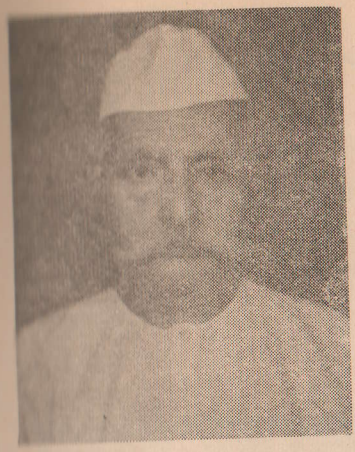

श्री ला० राम गोपाल गोयल
३०० बड़ा ठाकुर द्वारा,
शाहदरा दिल्ली-३२

★

राजस्थान के अग्रवाल अपनी व्यापारिक प्रतिभा के लिये प्रसिद्ध है। इन्होंने राजस्थान से चलकर सम्पूर्ण भारत में अपने व्यापार उद्योग का विस्तार किया है। ऐसे ही राजस्थानी परिवार के एक महापुरुष शाहदरा में उस समय आकर बसे जब शाहदरा बस ही रहा था। उस नवागन्तुक परिवार में श्री ला० पन्ना लाल जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके पुत्र श्री ला० कल्लूमल के कोई सन्तान न थी अतः आपने अपने साडू भाई श्री मूलचन्द जी मुनीम के पुत्र राम गोपाल को गोद ले लिया। उस समय बालक राम गोपाल की आयु १० वर्ष की थी।

किसी के काम आना और गरीब की सहायता करना श्री राम गोपाल जी गोयल का स्वभाव रहा है। समाज के प्रत्येक कार्य में लाला जी सदैव आगे रहते हैं। आप अग्रवाल सभा शाहदरा के लिये तो एक निधि हैं। समाज के लिये धन संग्रह करना और सदस्य बनाना, सदस्यों को सभा की बैठकों के लिये आमन्त्रित करना, समाज के किसी भी व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी करना और कराना इनका धर्म है। इनके सेवा कार्य का क्षेत्र केवल अग्रवालों तक ही सीमित नहीं है। गरीब कोई हो आप उसके अभाव को पूरा कराने को प्राथमिकता देते हैं।

श्री गोयल जी अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं। इस महासभा की सदस्य संख्या बढ़ाने में आपसे बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ है। महासभा के वर्तमान २२वें अधिवेशन को सफल बनाने में भी आपका सहयोग सराहनीय है।

आप द्वारा संस्थापित श्रीराम फ्लोर मिल्स बड़ा बाजार में अपना विशेष स्थान रखता है। आपने अपने एक पुत्र को फान्टेन पैन इंडस्ट्री लगवाई है जो सफलता पूर्वक चल रही है। अब आप सभी निज कार्यों से मुक्त होकर समाज सेवा कार्यों में ही अपना समय देते है।

गाजियाबाद निवासी श्री ला० हरसरन दास जी की सुपुत्री श्रीमती कुन्ती देवी आपकी धर्म पत्नी हैं। आपके ५ पुत्र और ५ पुत्रियां सभी विवाहित, अपने पिताश्री के नाम को ऊँचा किये हुए हैं।

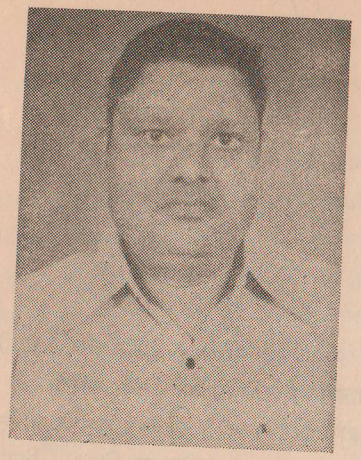

श्री जगदीश राय गुप्त,
ए-६५, विवेक विहार, दिल्ली-३२

वीर प्रसूता, धर्मक्षेत्र हरियाणा की भूमि के लाडवा (हिसार) में जन्मे श्री गंगादत्त के सुपुत्र जगदीश राय उन सौभाग्यशाली पुरुषों में हैं जिन्हें धार्मिक एवं समाज सेवा के पैतृक संस्कार अपने माता पिता से उत्तराधिकार रूप में मिले हैं। श्री गुप्त जी के पिताश्री आर्य समाज मंडी डववाली के प्रधान तथा अनेक सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहने के कारण अपने पुत्र को आर्य समाज और वैदिक संस्कारों में ढाल सके। सौभाग्य से श्री गुप्त जी की कालेज स्तर तक की शिक्षा भी हिसार दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज में होने के कारण उनके विचारों में सेवा और शुचिता के भावों में परिपक्वता आना स्वाभाविक था अत: अपने वैदिक संस्कारों की पृष्ठ भूमि में श्री गुप्त जी को आगे बढ़ाने में सभी परिवारी जनों का स्नेहमय सहयोग सदा उनके साथ रहा है। अत: अपनी शिक्षा पूरी कर वे अक्तूबर १९६२ में देहली पधारे और १३ वर्ष तक अखिल भारतीय स्तर की एक ट्रांस्पोर्ट कम्पनी के प्रबन्धक पद पर कार्यरत रह कर इस उद्योग में दक्षता प्राप्त की। तदुपरान्त आपने अपना निजी ट्रांस्पोर्ट का कार्य प्रारम्भ किया जिसे वे आज दिन नई सूझबूझ के साथ सफलतापूर्वक चला रहे हैं और इनका कारोबार आसाम से देहली तक फैला हुआ है।

श्री गुप्त जी अपने व्यस्त व्यापारिक जीवन में से समय निकाल कर अपने वंश की समाज सेवा की परम्परा को देहली के सामाजिक क्षेत्रों तक ले गये हैं और आज दिन आप अनेक सार्वजनिक संस्थाओं को आर्थिक संरक्षक देते रहते हैं तथा निम्नांकित संस्थाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

१. सैंट्रल सोसाइटी वैलफेयर आफ रोड ट्रांस्पोर्ट के सैक्रेटरी, २. भारतीय विकास परिषद् के सक्रिय सदस्य, ३. भारतीय रैडक्रास सोसाइटी के सक्रिय सदस्य, ४. विवेक विहार अग्रवाल सभा, के आजीवन सदस्य, ५. अखिल भारतीय अग्रवाल

महा सभा (पंजीकृत) दिल्ली-३२ के आजीवन सदस्य एवं कार्यकारिणी में विशिष्ट आमन्त्रित स्थायी सदस्य।

आप विधवा विवाह के प्रबल पक्षधर है एवं दहेज कुप्रथा के उन्मूलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

हरियाणा में बालसमन्द निवासी सुप्रसिद्ध ला० छबील दास जी की सुपुत्री श्रीमती सुभद्रा देवी गुप्ता आपकी धर्मपत्नी हैं जो धार्मिक विचारों की सद्गृहस्थ महिला हैं, जिनसे श्री गुप्त जी को इनके सामाजिक एवं व्यापारिक सभी कार्यों में सहयोग मिलता रहता है। आपकी पांच विवाहित पुत्रियां और शिक्षारत एक पुत्र इनके परिवार की शोभा हैं। ●●●

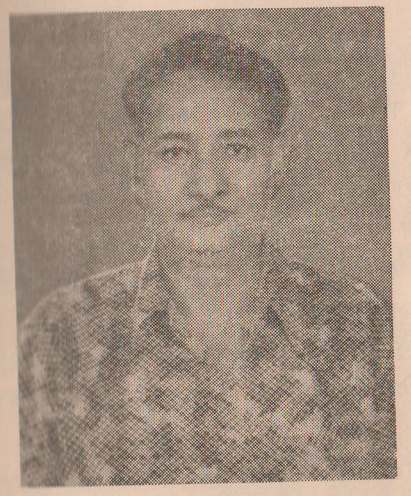

श्री मंगल सैन जैन,
७९, गज्जू कटरा,
शाहदरा दिल्ली-३२

उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध कस्बा खतौली (मुजफरनगर) निवासी श्री लाला गोकुल चन्द जी की जैन समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रही है। आप के पुत्र मंगल सैन का जन्म १९२४ में हुआ था। बालक मंगल सैन अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करके १९४८ में देहली आए और आज दिन आप सैंट्रल बैंक में एकाउंटेंट हैं।

आप प्रारम्भ से ही समाज सेवा के कार्यों में रुचि लेते आये हैं। आजकल आप अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के आजीवन सदस्य हैं और जैन समाज में कार्यकारिणी सदस्य हैं।

दिल्ली निवासी लाला मित्तर सैन की सुपुत्री श्रीमती मगन वाला जी आपकी धर्मपत्नी हैं जो एक सद्गृहस्थ महिला हैं। आपकी सन्तान में दो सुशिक्षित पुत्र तथा तीन विवाहित पुत्रियां हैं। सभी पुत्र पुत्रियां सुपथगामी हैं और पैतृक यश वृद्धि में सहायक हैं। ●●●

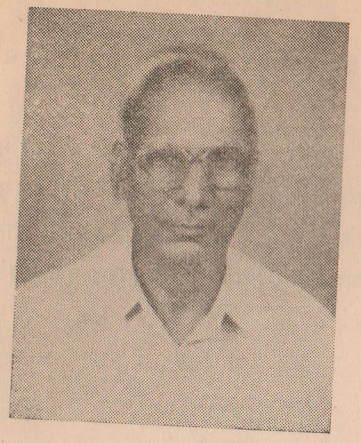

श्री जीती प्रसाद गर्ग
विजय कैमीकल वर्क्स,
33, आजाद नगर, दिल्ली-५१
निवास सम्पर्क—
इ०८/ए०/१२,
कृष्णा नगर, दिल्ली-५१

विजय कैमीकल वर्क्स, के संस्थापक श्री जीती प्रसाद जी गर्ग की गणना शाहदरा के उद्योगपतियों में है। कड़ा परिश्रम, लगन और व्यापारिक सूझ आपकी समृद्धि का मूल मन्त्र है। विनम्रता और मिलनसारी आपके स्वाभाविक आभूषण हैं। अपने उद्योग में व्यस्त रहने के कारण आप के पास समय का तो अभाव है किन्तु सभी संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देने में आप उदारमना हैं।

चिरौडी (मेरठ) के ला० श्री सागरमल जी के घर में सन् 1923 में जन्मे श्री जीती प्रसाद अपने व्यापार भरकी अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करके 1944 में चिरौडी से शाहदरा आये और 1959 में विजय कैमिकल वर्क्स की स्थापना की। आपने अपने पाँचों पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाई है और वे सभी आपके साथ निज उद्योग में संलग्न हैं।

गाजियाबाद निवासी लाला राम सिंह जी की सुपुत्री श्रीमती स्व० सरला देवी जी श्री जीती प्रसाद जी की धर्मपत्नी थीं। आपके पांच पुत्र—सर्वश्री विजय कुमार गर्ग, अनिल कुमार बी० ए०, अजय कुमार बी० ए०, राकेश कुमार बी० ए०, राजेश कुमार बी० ए०, इनके अनुशासित परिवार की शोभा और अपने उद्योग की निधि हैं।

अपने व्यवसाय में व्यस्त रहते हुए भी आप का सम्बन्ध शाहदरा की प्रायः सभी संस्थाओं के साथ किसी न किसी रूप में है। किन्तु अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के साथ आपका विशेष प्रेम है अतः आप इस संस्था के आजीवन सदस्य और इसकी कार्यकारिणी समिति के कर्मठ सदस्य हैं। इनका आर्थिक सहयोग और सुझाव इस संस्था को मिलते रहते हैं।

—: ० :—

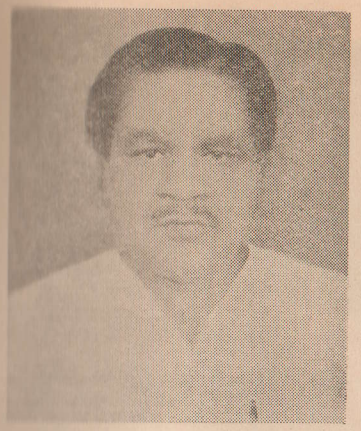

श्री मूल चन्द गुप्त
५/३१६, मौहल्ला महाराम,
शाहदरा दिल्ली-३२
औद्योगिक प्रतिष्ठान,
वैश्य ब्रदर्स
३३, आजाद नगर देहली-५१

श्री लाला चन्दू लाल जी बंसल की गणना शाहदरा के पुराने समृद्ध साहूकार परिवारों में की जाती है। यह परिवार सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी रहा है। श्री चन्दू लाल जी बंसल के ज्येष्ठ पुत्र लाला चुन्नी लाल जी सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता हैं। ऐसे ही धार्मिक और सामाजिक वातावरण में सन् १९२३ में जन्मे श्री चन्दू लाल जी के कनिष्ठ पुत्र श्री मूल चन्द जी अपने जीवन के प्रारम्भ से ही सार्वजनिक सेवा के कार्यों में भाग लेते आये हैं। आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त श्री गुप्त जी दान देने में मुक्तहस्त रहे हैं।

श्री गुप्त जी वैसे तो सभी सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। किन्तु आपका विशेष सम्बन्ध निम्नांकित संस्थाओं से है—

सनातन धर्म सभा, शाहदरा के प्रधान,
शाहदरा रामलीला कमेटी के प्रधान,
अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के आजीवन तथा कार्यकारिणी सदस्य,
शाहदरा अग्रवाल सभा, शाहदरा के उपप्रधान।

श्री गुप्त जी की गणना शाहदरा के उद्योग पतियों में है। आपकी औद्योगिक सूझबूझ अनुकरणीय है। आपसे प्रेरणा लेकर तथा आपके आर्थिक सहयोग से कई उद्योगों को बल मिला है। सम्प्रति आपका कैमीकल्स का उद्योग "वैश्य ब्रदर्स" के नाम से चलता है।

आपका पुराना वस्त्र-व्यापार छोटा बजार में अपना विशेष स्थान रखता है। आपका पैतृक व्यवसाय साहूकारा है।

लाला दुर्गा दास जी की सुपुत्री श्रीमती प्रेमवती जी श्री मूल चन्द जी की धर्मपत्नी हैं। आपकी सन्तान में चि० विजय, राकेश, अलका और गीता आपकी कीर्ति को बढ़ाने वाले हैं।

●●●

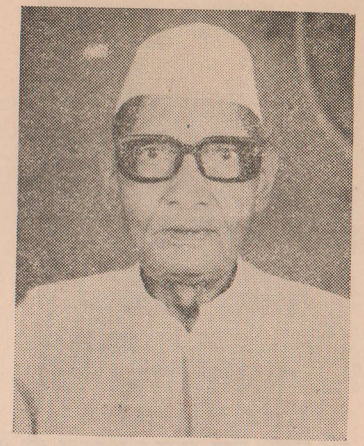

श्री मामचन्द बजाज,
बड़ा ठाकुरद्वारा,
शाहदरा दिल्ली-३२

सर्वश्री चन्दूलाल मामचन्द बजाज, ९८, छोटाबाजार शाहदरा में जानामाना नाम है। इस संस्थान की स्थापना श्री मामचन्द जी गोयल ने सन् १९३२ में निज प्रयास से की थी। अपने कपड़े के व्यापार में आपने ईमानदारी और मधुर व्यवहार के कारण अच्छा नाम कमाया है।

श्री मामचन्द जी का जन्म श्री लाला चन्दूलाल जी गोयल के घर में सन् १९०९ में हुआ था। आपने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाई अतः आपके दो पुत्र श्री सुरेशचन्द्र एवं श्री विनोद कुमार सरकारी सेवा में कार्यरत हैं और श्री अशोक कुमार आप के साथ कपड़े के व्यापार में संलग्न हैं।

अपने कपड़े के व्यापार में व्यस्त रहते हुए भी श्री मामचन्द जी सार्वजनिक कार्यों में भी रुचि लेते हैं। आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य तथा इसकी कार्यकारिणी समिति के कर्मठ एवं क्रियाशील सदस्य हैं। शाहदरा की अन्य संस्थाओं के साथ भी आपका सम्बन्ध है।

सोनीपत निवासी श्री ज्योतिप्रसाद जी की सुपुत्री श्रीमती मामकौर जी श्री मामचन्द जी की धर्म पत्नी हैं जो सद्गृहस्थ महिला हैं।

श्री मामचन्द जी की प्रबल इच्छा है कि शाहदरा में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा का एक भवन बनना चाहिये।

—: ० :—

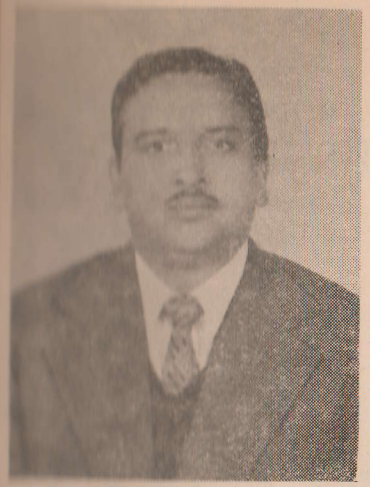

श्री कैलाश चन्द बंसल,
२८३, बड़ा ठाकुरद्वारा,
शाहदरा दिल्ली-३२

शाहदरा की व्यापारिक गद्दियों में सन् १८८० ई० में स्थापित "खैरातीमल छोटूमल, अनाज मंडी शाहदरा में जाना माना प्रतिष्ठान है। श्री लाला छोटूमल के सुपुत्र लाला रामस्वरूप जी बंसल शहर के सुप्रसिद्ध व्यापारी थे। इनके दो पुत्र श्री शिवनाथ जी तथा कैलाश चन्द जी बंसल ने अपने पिताश्री के परिवार को प्रकाशित किया है।

श्री कैलाश चन्द जी का जन्म सन् १९४१ में हुआ। श्री बंसल जी ने अपने परम्परागत व्यापार से आगे बढ़कर अपने लिये नई दिशा निर्धारित की। आपने समय के साथ बी० काम० आनर्स तथा एम० काम० परीक्षायें उत्तीर्ण कर चार्टर्ड एकाउंटेंसी परीक्षा भी उत्तीर्ण की और दरियागंज दिल्ली में चार्टर्ड एकाउन्टेंट के रूप में भागीदारी में अपनी प्रैक्टिस आरम्भ कर दी जो प्रभूत सफलतापूर्वक चल रही है।

श्री बंसल जी अपने शिक्षा काल से ही सामाजिक कार्यों में भाग लेते रहे हैं। अपने व्यवसाय की गुरुता के कारण समाज सेवा के कार्यों के लिए समय का तो इनके पास अभाव है किन्तु सार्वजनिक संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देकर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाते रहते हैं। आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं और इसकी कार्यकारिणी के भी प्रतिष्ठित सदस्य हैं।

हापुड निवासी सुप्रसिद्ध कृषि पंडित श्री रतन प्रकाश जी की सुपुत्री श्रीमती वीना बंसल, एम० ए० सामाजिक कार्यों में रुचि लेती हैं। आपकी सन्तान में दो पुत्र एवं दो पुत्रियां इनके परिवार की शोभा हैं।

१. सर्वश्री खेरातीमल छोटूमल
२५७, अनाज मंडी, शाहदरा दिल्ली-३२
२. ४६४८/२१, अंसारी रोड
दरियागंज, देहली-२

श्री ओम प्रकाश गर्ग,
शाहदरा सीरा सप्लाई कम्पनी,
४००/१, छोटा ठाकुरद्वारा,
शाहदरा दिल्ली-३२

दो हाथों से कमाते हुए धन को समाज हित में उदारता पूर्वक व्यय करने वाले की कीर्ति अमर रहती है; इस सिद्धान्त के अनुसार श्री ओम प्रकाश जी गर्ग, सीरावाले अपनी आय का एक भाग समाज हित में व्यय करने में कभी संकोच नहीं करते। अपने व्यस्त व्यापारिक कार्यों में से समय निकालकर सार्वजनिक कार्यों के लिये समय देना भी समाज के हित में बड़ा योगदान है। इस दृष्टि से भी श्री गर्ग जी निम्नांकित संस्थाओं में क्रियात्म रूप से भाग लेते रहते हैं—

- सनातन धर्म सभा, शाहदरा के सदस्य,
- सनातन धर्म सभा विद्यालय के भू० पू० चेयरमैन,
- रामलीला कमेटी, शाहदरा के उप प्रधान
- अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य

इसके अतिरिक्त आप अनेक अन्य संस्थाओं में आर्थिक सहयोग देकर कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

छोटा ठाकुरद्वारा, शाहदरा निवासी श्री ला० राम गोपाल जी गर्ग के घर में सन् १९३१ में जन्मे बालक ओम प्रकाश ने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करके शाहदरा सीरा सप्लाई कम्पनी के नाम से कार्य प्रारम्भ किया और आज दिन इनका यह व्यवसाय सफलतापूर्वक चल रहा है।

श्री ला० परमेश्वरी लाल जी की सुपुत्री श्रीमती राममूर्ति देवी जी श्री ओम प्रकाश जी की धर्मपत्नी हैं। आपकी सन्तान में तीन पुत्र तथा छः पुत्रियां हैं। भरा पूरा परिवार और सुख समृद्धि इनके लिए ईश्वरी वरदान है।

●●●

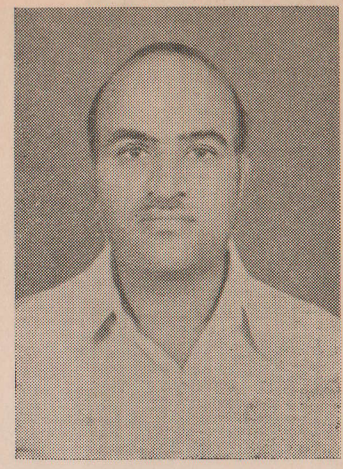

श्री योगेन्द्र पाल अग्रवाल,
४७५, तेलीवाड़ा,
शाहदरा दिल्ली-३२

वीर प्रसूता हरियाणा भूमि के पूंडरी निवासी श्री लाला खैराती लाल जी गर्ग के ज्येष्ठ पुत्र श्री योगेन्द्रपाल जी का जन्म सन् १९४२ में पूंडरी में हुआ था। आपने हाई स्कूल परीक्षा प्राप्त करके अपने पैतृक व्यवसाय में प्रवेश किया और सन् १९७३ में देहली के तिलक बाजार में अग्रवाल कैमीकल्स नाम से अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान की स्थापना की।

श्री योगेन्द्र पाल जी के लघु भ्राता श्री सतीश जी अग्रवाल, सदस्य दिल्ली नगर निगम, जिनका परिचय अलग से दिया गया है, व्यापार में आपके सहयोगी हैं। तिलक बाजार में अग्रवाल कैमीकल्स संस्थान का अपना विशेष स्थान है।

श्री योगेन्द्र पाल जी समाज सेवा के कार्यों में रुचि लेते हैं और सभी सार्वजनिक संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देते रहते हैं। आप धार्मिक विचारों के नवयुवक हैं अतः स्थानीय भूतेश्वर मन्दिर के कोषाध्यक्ष हैं। आपका सहयोग अग्रवाल सभाओं को भी मिलता रहता है। आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं।

पानीपत निवासी श्री रवि स्वरूप जी की सुपुत्री श्रीमती सुनीता जी श्री योगेन्द्र पाल जी की धर्मपत्नी हैं जो एक शिक्षित सद्गृहस्थ महिला हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी भाग लेती हैं। आपके दो पुत्र और दो पुत्रियां गृह शोभा हैं।

व्यापारिक प्रतिष्ठान,
अग्रवाल कैमीकल्स,
११०, तिलक बाजार, देहली-६

—: ० :—

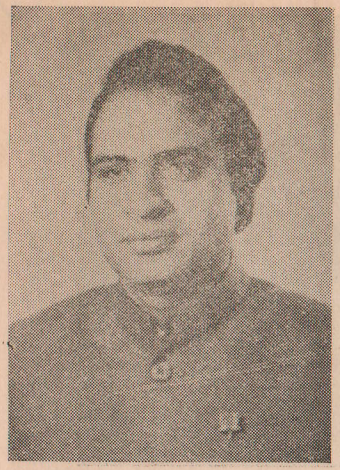

अग्रवाल कैमीकल वर्क्स,
११०, तिलक बाजार, दिल्ली-६
फोन २०१२०६
श्री सतीश अग्रवाल,
४७५, तेलीवाडा, शाहदरा दिल्ली-३२
फोन २०३४७६

दिल्ली नगर निगम के सदस्य, ३२ वर्षीय श्री सतीश जी अग्रवाल को इस छोटी सी आयु में जो राजनीतिक सफलता मिली है उसे पूर्वजन्म के संस्कारों द्वारा प्राप्त सेवा भावों का ईश्वरीय वरदान ही कहा जा सकता है। जब हम श्री अग्रवाल जी के नगर निगम के सदस्य निर्वाचित होने से पूर्व के जीवन की झांकी लेते हैं तो स्पष्ट रूप से समाज सेवा के कार्य इनकी अभ्युदय की भविष्य वाणी स्वयं ही कर देते हैं। अतः इनके विचार और समाज सेवा के प्रति समर्पण इनके राजनीतिक उत्कर्ष के द्योतक हैं।

श्री ला० खैराती लाल जी अग्रवाल के घर में जन्मे बालक सतीश ने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करके पैतृक व्यापार में सहयोग देना आरम्भ कर दिया और पास पडौस में समाज सेवा करते हुए लोकप्रियता उपार्जित करने लगे। श्री अग्रवाल जी सम्पन्न घर के बालक होने के कारण चिन्ताओं से मुक्त होकर अपने सेवा के मिशन में आगे बढ़ते गये और फलस्वरुप आज आप दिल्ली नगर निगम के सदस्य निर्वाचित हुए हैं।

श्री अग्रवाल जी अपने कैमीकल्स के व्यवसाय को योग्यता पूर्वक चला रहे हैं और समाज सेवा के कार्य को प्राथमिकता देते हुए अपने क्षेत्र की अच्छी सेवा कर रहे हैं। आपका सम्बन्ध अनेक सार्वजनिक संस्थाओं से हैं जिनमें से प्रमुख निम्नांकित हैं :—

० सनातन धर्म सभा, शाहदरा,
० राम लीला कमेटी, शाहदरा,
० भारत ब्लाइंड स्कूल, शाहदरा,

सम्प्रति आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विमला अग्रवाल एक सुशिक्षित एवं विनम्र स्वभाव की महिला हैं। आपके एक पुत्र तथा एक पुत्री गृह की शोभा हैं। □

डा. नरेन्द्रनाथ, पार्षद
२१५-२१६, गज्जू कटरा,
शाहदरा, दिल्ली-३२

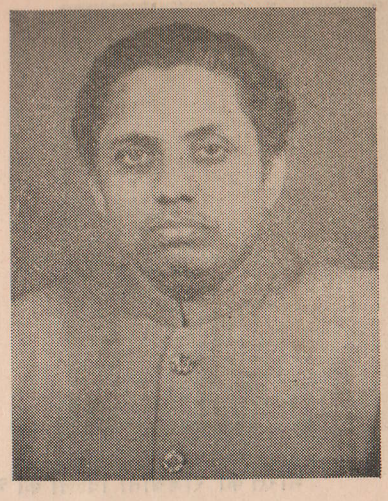

"पूत के पांव पालने" ही दिखाई दे जाते हैं, यह लोकोक्ति बहुत सारगर्भित है। जब हम डा. नरेन्द्रनाथ के बालकाल की एक झलक लेते हैं तो इस कहावत का महत्व स्पष्ट रूप से सामने आ जाता है। व्यवसाय से चिकित्सक के नाते डा. नरेन्द्रनाथ समाज सेवक तो हैं ही, इन्होंने अपने व्यवसाय के साथ सार्वजनिक सेवा कार्यों में जब भाग लेना आरम्भ किया तो देखने वाले समझ गए थे कि डा. नरेन्द्रनाथ एक दिन नगर की राजनीति में चमकेंगे। इनके सेवा कार्य की पद्धति इतनी सुथरी और प्रभाव कारी रही है कि आप छोटी आयु में ही लोकप्रिय और अजातशत्रु बन गए और सभी की जबान पर इनका नाम आ गया। किसी को चचा, किसी को ताऊजी तो किसी को भाई कहकर आगन्तुक को मधुर मुस्कान से सन्तुष्ट कर देना डा. नरेन्द्रनाथ का स्वाभाविक गुण है जिसके कारण आपने इस बार के महानगर परिषद् के निर्वाचन में अपूर्व सफलता पाई है और अपनी संगठन शक्ति और कौशल का परिचय दिया है। आप महानगर परिषद, दिल्ली के प्रभावशाली पार्षद हैं।

शाहदरा निवासी श्री त्रिलोक चन्द जी सिहल के सुपुत्र डा. नरेन्द्र नाथ का जन्म सन् १९४४ में हुआ था। आपने बी. आई. एम. एस. परीक्षा उत्तीर्ण करके शाहदरा में ही चिकित्सक कार्य प्रारम्भ किया। सौभाग्य से इनकी धर्मपत्नी डा. शशि कला जी स्व भी सफल चिकित्सक हैं अतः डा. नरेन्द्र नाथ को अपने व्यवसाय में प्रभूत सफलता मिली है।

आपकी चार पुत्रियां माता पिता की दुलारी हैं और, विद्यालय की छात्रायें हैं। आप अ० भा० अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं। ★

० ० ०

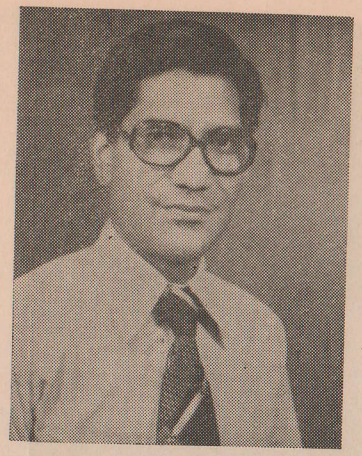

श्री बनारसी दास गुप्त,
९/३६०, प्लाट नं० २९९,
डी० एस० ब्लाक, भोलानाथ नगर,
शाहदरा दिल्ली-३२

भारत की राजधानी दिल्ली का चांदनी चौक और उसका जाना माना मौहल्ला हैदरकुली दिल्ली के समृद्ध परिवारों की निवास स्थली रहा है। उसी हैदरकुली मौहल्ले के एक सम्भ्रांत एवं प्रतिष्ठित व्यापारी ला० भोलानाथ जी के सुपुत्र बनारसी दास का जन्म सन् १९४० में हुआ। श्री ला० भोला नाथ के पिताश्री सीताराम जी सतनाली ग्राम (महेन्द्रगढ़) के चौधरी माने जाते थे।

प्राय: व्यापारी परिवार के बालक अपने व्यापार में काम भर की शिक्षा तक ही सीमित रह जाते थे किन्तु यह सौभाग्य की बात है कि श्री भोलानाथ जी ने इस लीक से हट कर अपने पुत्र को उच्च शिक्षा दिलाई अत: श्री बनारसी दास जी ने श्रीराम कालेज ऑफ कौमर्स, दिल्ली से बी० कौम० परीक्षा उत्तीर्ण की और आगरा विश्व विद्यालय से एल० एल० बी० की उपाधि से अलंकृत हुये। अपनी शिक्षा पूरी करके आपने ग्रिण्डले बैंक में सेवा कार्य प्रारम्भ किया और शाहदरा में आकर बस गये।

शाहदरा आकर श्री बनारसी दास जी के समाज सेवा के पैतृक संस्कार जागृत हुये अत: आप सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी विशेष रुचि लेने लगे और आज दिन आप समाज की निष्ठापूर्वक तन, मन, धन से सेवा करते रहते हैं। समाज सेवा क्षेत्र में समाज कल्याण का कोई भी कार्य हो श्री गुप्त जी सदैव अग्रणी रहते हैं।

आप सम्प्रति अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं और निष्ठापूर्वक महा सभा के कार्यों के लिये समर्पित हैं।

महरौली के सम्भ्रान्त वैश्य परिवार में जन्मी श्रीमती सन्तोष गुप्ता इनकी धर्मपत्नी हैं जो सद्गृहस्थ महिला हैं और श्री बनारसी दास जी के समाज सेवा कार्यों में इनकी पूरक हैं। आपके चार पुत्र आपके परिवार की शोभा हैं। इनके बड़े पुत्र चि० कपिल गुप्त कपड़े का व्यापार करते हैं।

० ० ०

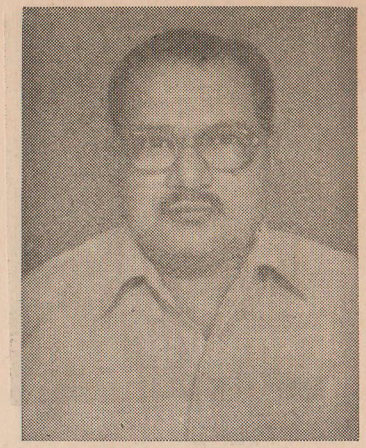

श्री नन्द किशोर गर्ग
३१५/१, बड़ा ठाकुरद्वारा,
शाहदरा दिल्ली-३२

शाहदरा में मौहल्ला बड़ा ठाकुरद्वारा अग्रवालों का गढ़ है। इसी मौहल्ले के निवासी श्री लाला नन्द किशोर जी की गणना विशिष्ट परिवारों में है। आपका व्यापारिक प्रतिष्ठान सर्वश्री खेमचन्द नन्दकिशोर नाम से श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली में सुविख्यात है। अपने व्यस्त जीवन के कारण आप सामाजिक कार्यों में समय तो नहीं दे पाते किन्तु सार्वजनिक कार्यों में संलग्न कार्यकर्ताओं को आर्थिक सहयोग देकर समाज के कार्यों में हाथ बटाते रहते हैं।

श्री नन्द किशोर जी का जन्म सन् १९३२ में श्री मनोहर लाल जी गर्ग के घर में हुआ था। आप अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यवसाय में लग गये जिसमें आपको प्रभूत सफलता मिली है।

देहली निवासी श्री तुलेराम जी की सुपुत्री श्रीमती त्रिवेणी देवी जी श्री नन्द किशोर जी की धर्मपत्नी हैं। आप भी गृहस्थ जीवन के साथ साथ सामाजिक कार्यों में रुचि लेती हैं। आपके सुपुत्र श्री सुशील कुमार जी अपने पिताश्री के साथ व्यापार में ही संलग्न हैं।

श्री नन्द किशोर जी अ० भा० अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं।

—: ० :—

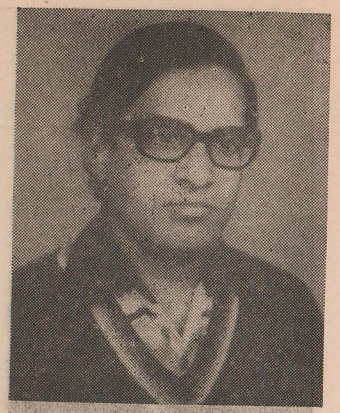

श्री ओ० पी० गुप्ता,
५/७०, गज्जू कटरा,
शाहदरा, दिल्ली-३२

इंजीनियरिंग ग्रेजुएट श्री ओ० पी० गुप्त के पिताजी श्री ला० बैजनाथ जी गोयल की गणना शाहदरा के प्रतिष्ठित परिवारों में रही है। इस परिवार का यह सौभाग्य है कि श्री ओ० पी० गुप्त ने अपने परिवार की कीर्ति को आगे बढ़ाया है।

सन् 1945 में जन्मे श्री गुप्त जी ने इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन लेकर इंडियन गैस डिस्ट्रीब्यूशन का कार्य आगे बढ़ाया है। आपकी फर्म सर्वश्री बी० एन० गुप्ता एण्ड कम्पनी, भोलानाथ नगर नाम से प्रसिद्ध है। दूसरी शाखा बड़ा बाजार में है। आपके पिताश्री ने गैस डिस्ट्रीब्यूशन का कार्य प्रारम्भ कर अपनी व्यापारिक प्रतिभा का परिचय दिया था जिसकी उपयोगिता आज दिन सर्वसिद्ध है।

श्री गुप्त जी अपने व्यवसाय के साथ अनेक सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं जिनमें से कुछ के नाम उल्लेखनीय हैं—

१ लाइन्स क्लब ग्रेटर शाहदरा के प्रथम उपप्रधान,

२ नार्दन इंडिया एल० पी० जी० डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसियेशन के सैक्रेटरी।

३ इंडियन रैडक्रास सोसाइटी के कार्य कारिणी सदस्य, शाहदरा मैडिकल सोसाइटी के कार्यकारिणी सदस्य, शाहदरा सिटीजन वैलफेयर कौन्सिल के कार्य-कारिणी सदस्य, सिटीजन्स नैशनल डेज़ सैलेब्रेशन कमेटी के आजीवन सदस्य, अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के आजीवन सदस्य, न्यू देहली फिल्म सोसाइटी के तथा जन कल्याण समिति के सदस्य।

गाजियाबाद निवासी श्री लाला हरिकिशन जी अग्रवाल की सुपुत्री श्रीमती शशि गुप्ता बी० ए० आपकी धर्मपत्नी हैं। आपके दो पुत्र तथा एक पुत्री गृह की शोभा हैं।

० ० ०

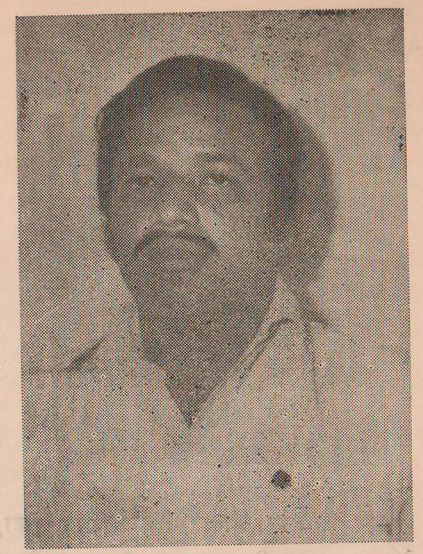

श्री नरेश चन्द गुप्त,
३०७ बड़ा ठाकुर द्वारा,
शाहदरा दिल्ली-३२

शाहदरा के सर्राफ परिवारों में श्री जय प्रकाश जी सर्राफ का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। गोयल गोत्रीय श्री जयप्रकाश जी सर्राफ के पुत्र नरेश चन्द गुप्त का जन्म १९५६ में हुआ। आपने समय के साथ आगे बढ़ते हुए पैतृक व्यवसाय से आगे बढ़कर शिक्षा की ओर ध्यान दिया और बी० कॉम परीक्षा उत्तीर्ण कर अपने परिवार के व्यवसाय की दिशा बदली। सन् १९२३ से आप नरेश केबल के नाम से अपना निज व्यवसाय करते हैं।

श्री गुप्त जी विद्याध्ययन काल से ही सामाजिक कार्यों में भाग लेने लगे थे अत: आपके सेवा कार्यों का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो चुका है। आजकल आप लायंस क्लब में डाइरेक्टर पद पर रहकर समाज के अभावग्रस्त जनों की सेवा करते हैं। आप उदारता पूर्वक समाज के कार्यों में आर्थिक सहयोग देते रहते हैं।

शाहदरा निवासी श्री वेद प्रकाश जी गर्ग की पुत्री श्रीमती सुनीता बी० ए० आपकी धर्मपत्नी हैं जो जानी मानी समाज सेविका हैं। आपकी सन्तान में दो पुत्र तथा एक पुत्री गृह शोभा हैं।

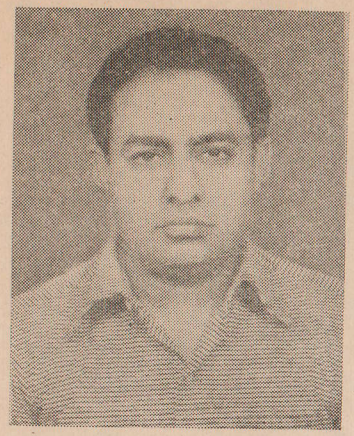

१. डा. राम अवतार अग्रवाल
गर्ग क्लीनिक, मेन रोड़, मौजपुर,
दिल्ली-५३
२. शालीमार पार्क, रामलीला मैदान
के निकट, भोलानाथ नगर,
शाहदरा दिल्ली-३२
३. निवास-४९८/१ ए. कैलाश भवन,
भोलानाथ नगर, शाहदरा दिल्ली-३२

शाहदरा की पुरानी विभूतियों में डा. शीतल प्रसादजी अग्रवाल का नाम सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। इस सेवाभावी परिवार की कड़ी में इनके सुपुत्र डा. राम अवतार का नाम सेवा शृंखला को आगे बढ़ाता है। सन् १९४५ में जन्मे श्री राम अवतार जी ने छोटी आयु में ही अपने चिकित्सा व्यवसाय में अच्छा नाम कमाया है। इनकी ख्याति में इनके पिताश्री की ख्याति ने चार चांद लगा दिए हैं। आप देहली के बी. आई. एम. एस. हैं।

वैसे तो चिकित्सा व्यवसाय ही ऐसा है जिसका जन सेवा से सीधा सम्बन्ध है किन्तु डा. राम अवतार के विनम्र स्वभाव एवं समाज के सभी कार्यों में सहायक रहने के कारण इनकी ख्याति और भी बढ़ी है।

आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के आजीवन सदस्य हैं और अग्रवाल समाज के सेवा कार्यों में क्रियात्मक रूप से भाग लेते रहते हैं।

पिलखुवा के सुप्रसिद्ध श्री विश्वनाथ जी की सुपुत्री श्रीमती शकुन्तला गर्ग एम. ए. आपकी धर्मपत्नी हैं। आपकी सन्तान में एक पुत्र और दो पुत्रियां गृह की शोभा हैं।

१. श्री जगदीश प्रसाद गुप्त
७९/ए, शकुन्तला कुटीर
विजय नगर, मेरठ शहर

२. श्री जगदीश प्रसाद गुप्त,
सर्वश्री जे. पी. गुप्ता एण्ड संस,
२७४, खैर नगर गेट, मेरठ।
फोन ७३९४८

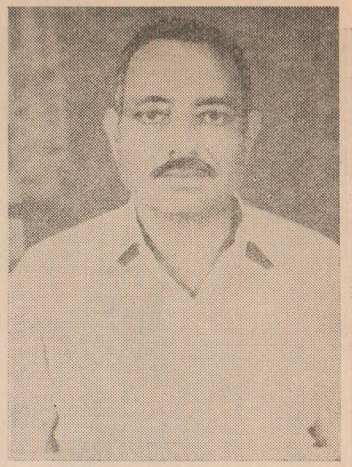

मेरठ निवासी श्री ला. ओम प्रकाश जी के घर में जन्मे श्री जगदीश प्रसाद जी गुप्त का व्यक्तित्व व्यवसायी, समाज सेवी और क्षात्र धर्म से परिपूर्ण है। एक वैश्य में जो गुण होने चाहिए श्री जगदीश प्रसादजी उनके धनी हैं। आपने समाज सेवा में अपना विशेष स्थान बना लिया है। महाराजा अग्रसेन स्मारक सैकेण्डरी विद्यालय, बरला के लिए आपने अपने पास से तथा अपने सहयोगियों से धन संग्रह करके उल्लेखनीय धन राशि द्वारा विद्यालय की सहायता की है। मेरठ में रहते हुए आप अग्रवाल सभाओं के कार्यक्रमों में सोत्साह भाग लेते रहते हैं।

श्री कंसल जी अग्रवाल सर्वहितकारी समाज (केन्द्रीय) के महामन्त्री हैं और महाराजा अग्रसेन विद्यालय के कार्यकारिणी सदस्य हैं।

मेरठ निवासी श्री ओमप्रकाश जी कंसल के पुत्र श्री जगदीश प्रसाद जी गुप्त ने अपने तीन पुत्रों—प्रमोद कुमार, अजय कुमार और अनुज कुमार तथा तीन पुत्रियों—स्नेह लता, ममता तथा सुधा सभी को उच्च शिक्षा दिलाई है। आपका मोटर पार्ट्स का व्यापार है जिसे आप अपने पुत्रों के सहयोग से सफलता पूर्वक चला रहे हैं। अलीगढ़ निवासी श्री ला. सन्नालाल जी सुपुत्री श्रीमती शकुन्तला देवी आपकी धर्मपत्नी हैं जो आपके सामाजिक कार्यों में भी सहायक हैं।

श्री जगदीश प्रसाद जी गुप्त अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा (पंजीकृत) दिल्ली-३२ के आजीवन सदस्य एवं कार्यकारिणी सदस्य हैं।

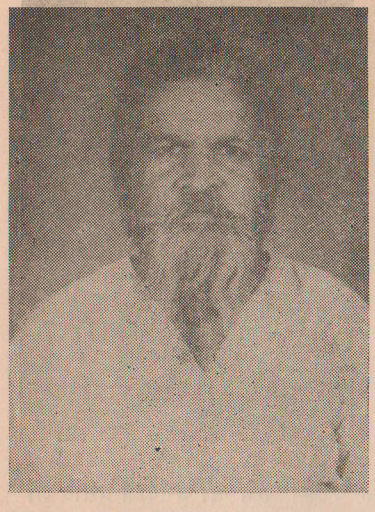

श्री सुख लाल मित्तल,
चमन-ए-बहार वस्त्र भण्डार,
निकट छर्रा अड्डा, अलीगढ़

अलीगढ़ के सुरेन्द्र नगर, सुदामापुरी, विष्णु पुरी, और बेगमबाग क्षेत्रों में समाज सेवा के कार्यों में निष्ठावान, उत्साही और सेवाभावी श्री मित्तल जी के नाम से जाने माने श्री सुखलाल जी मित्तल का नाम अग्रणी पंक्ति में आता है। आपने अपने लम्बे सेवा काल में जन जन का स्नेह प्राप्त किया है। पदों की कामना से दूर रह कर समाज के सभी सेवा कार्यों में श्री मित्तल जी को कार्यरत देखा जा सकता है।

आपका स्वावलम्बी जीवन नवयुवकों के लिये अनुकरणीय है और प्रेरणा दायक भी। आप अपने सेवा कार्यों के प्रभाव से अग्रवाल सभा, बेगमबाग, अलीगढ़ के प्रधान हैं और अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं।

अलीगढ़ निवासी सुप्रसिद्ध श्री सालिग राम श्री मित्तल के सुपुत्र बालक सुखलाल का जन्म १५ अगस्त १९२५ ई० में हुआ था। बालक सुखलाल ने समय के अनुसार हाईस्कूल परीक्षा पास की और समय के साथ आगे बढ़ते हुए अपने पुरुषार्थ से निम्नांकित व्यवसाय स्थापित किये हैं :—

१. चमन-ए-बहार वस्त्र भण्डार तथा मृदुल फ्लोर मिल्स,
२. फेयर प्राइस शाप (सरकारी गल्ले की दूकान)

श्री लाला लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल की पुत्री श्रीमती शारदा देवी आपकी धर्मपत्नी हैं। आप एक सद्गृहस्थ महिला हैं। आपकी सन्तान में सात पुत्र एवं तीन पुत्रियां गृह शोभा हैं।

० ० ०

श्री सुख राम बंसल, छर्रा।
३३६, जवाहर चौक,
छर्रा (अलीगढ़) उ० प्र०

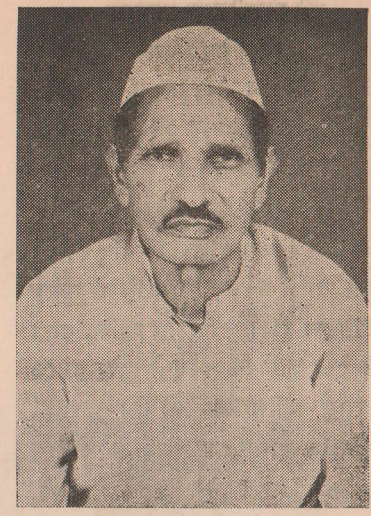

स: जातो येन जातेन यात: वंश: समुन्तम् ।
प्रवृतिनस्मिन संसारे क मृत: व न जायते ।।

इस उलट पुलट होने वाले संसार में न जाने कितने जीव प्रति दिन पैदा होते हैं और कितने मृत्यु का आहार बनते हैं। किन्तु संसार उसी को पैदा हुआ मानता है जिसके पैदा होने से देश की, जाति की तथा उसके राष्ट्र की उन्नति हो।

इस लोकोक्ति के अनुसार श्री सुखराम जी का जीवन आदर्श कहा जा सकता है। आपने न केवल अपने कुल को आगे बढ़ाने में अपना योगदान किया है, अपितु जाति और देश के लिए भी आपका योगदान उल्लेखनीय है। आर्य समाज, शिक्षा प्रसार और समाज संगठन की दिशा में आपका योगदान सराहनीय है।

आप महाराजा अग्रसेन स्मारक सैकण्डरी विद्यालय, बरला के सहयोगी संस्थापकों में हैं और इसकी उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नशील हैं।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं। आपका घनिष्ठ सम्बन्ध आर्य समाज से है।

व्यवसाय में शुचिता के साथ मनसा-वाचा-कर्मणा आपका जीवन सत्यनिष्ठ है।

आपके पूर्वज किसी समय कासगंज से छर्रा में आए थे और आपके पिताश्री भिकारी दास जी ने "अग्रवाल ट्रेडर्स" नाम से आढ़त की गद्दी स्थापित की थी। श्री भिकारी दास के पुत्र श्री सुखराम जी बंसल ने हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करके अपना पैतृक व्यवसाय आगे बढ़ाया। आपका जन्म सन् १९१० में हुआ था।

श्री लाला नत्थामल जी की सुपुत्री श्रीमती किरण देवी जी आपकी धर्म पत्नी हैं जो सामाजिक कार्यों में रुचि लेती हैं। आपने अपने सभी पुत्र पुत्रियों को उच्च शिक्षा दिलाकर सुयोग्य बनाया है। आपके पुत्र श्री सुभाष नगेन्द्र ऐडवोकेट हैं और तीन पुत्र सर्वश्री इन्द्रस्वरूप, राजेन्द्र कुमार तथा राजेश अग्रवाल आपके साथ व्यापार में संलग्न हैं। आपकी तीन सुशिक्षित पुत्रियां अच्छे घरों में विवाही गई हैं।

श्री मुरारीलाल अग्रवाल
श्री अग्रसेन भवन
गोवर्धन रोड़, मथुरा,
फोन, ३२९१

किसी व्यक्ति के परिचय में उसके जन्म स्थान, शिक्षा दीक्षा परिवार का जो महत्व होता है उससे कहीं अधिक महत्व इस बात का होता है कि उस व्यक्ति द्वारा कौनसे ऐसे कार्य किए गए हैं जो समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी हैं।

जातीय सामाजिक कार्य के क्षेत्र में श्री अग्रवाल द्वारा ऐसे अनेक विचारों, चिन्तन तथा कार्यों को स्वर देने और उन्हें अंजाम देने में पिछले २२ वर्षों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है। विभिन्न प्रांतों में अग्रवाल वैश्य समाज को संगठित और जागृत करने, युवा वर्ग में उसके मनोबल को ऊंचा करने का भाव उत्पन्न करने, अग्रोहा पुन्य भूमि के विकास के लिए वातावरण बनाने, जिला स्तर पर सामाजिक रूढ़ियों व कुरीतियों को हटाने, अग्रसेन-अग्रोहा व अग्रवाल के इतिहास लेखन, अनेक सामयिक समस्याओं पर कलम चलाने जैसे अनेक कार्यों को श्री अग्रवाल ने अंजाम दिया है।

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन तथा अ० भा० अग्रवाल महासंघ के सक्रिय और कर्मठ कार्यकर्ता इनकी स्थापना के समय से ही रहे और दोनों के प्रचार विभाग के मंत्री रहे तथा अहिन्दी भाषी प्रांतों में संगठन किया।

आत्म प्रचार के लोभ से सर्वथा दूर रहने वाले श्री अग्रवाल का विश्वास सदैव रचनात्मक और ऐसे कार्यों में रहा है जिनसे युवा पीढ़ी को प्रेरणा मिले। कागजी कार्य करने वालों तथा जीवन में झूठ का व्यवहार करने वालों के साथ आपकी पटती नहीं। जीवन में अच्छे गुणों तथा सद्व्यवहार का महत्व अच्छे समाज निर्माण के लिए होता है। किसी भी बुरे कार्यों की निंदा और अच्छे कार्य की सराहना की जानी चाहिए, श्री अग्रवाल ऐसी विचारधारा के पोषक हैं।

जिला अग्रवाल सभा, मथुरा के पिछले अनेक वर्षों से मंत्री रहकर समाज सुधार की दिशा में ऐसे अनेक कार्यों को श्री अग्रवाल ने स्वर दिया जिन्हें आज अग्रवाल समाज के अलावा अन्य जातियों में भी स्वीकार किया गया है। विधवाओं की सहायता, दहेज के प्रदर्शन और क्रय विक्रय के विरुद्ध आप सदैव प्रयत्नशील रहते हैं।

अ० भा० अग्रसेन जयन्ती राष्ट्रीय प्रचार समिति के द्वारा आपने दक्षिण और पूर्व के प्रांतों में काफी प्रचार कार्य किया है। यह सब अकिंचन प्रयास मील के पत्थर की भांति है। कार्य करने वाले पैदा हों, इसकी आवश्यकता है।

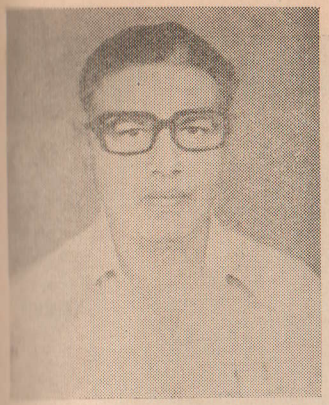

श्री हनुमान प्रसाद डालमिया
वासुदेव भवन, मेन रोड,
राजगांगपुर (सुन्दरगढ़) उडीसा

राजस्थान में चिडावा उन नगरों में से है जिसने आज से लगभग ६० वर्ष पूर्व ही शिक्षा प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया है। चिडावा नगर की ख्याति विश्व विख्यात डालमिया परिवार के कारण भी है। ऐसे शिक्षा केन्द्र चिडावा नगर के गर्ग गोत्रीय श्री वासुदेव जी डालमिया के घर में सन् १९३६ में जन्मे श्री हनुमान प्रसाद जी डालमिया ने हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर समय के साथ अपने पैतृक व्यवसाय से हट कर ठेकेदारी का निज व्यवसाय सन् १९३२ ई० से प्रारम्भ किया जिसके वे मेनेजिंग पार्टनर हैं। आपके सुपुत्र श्री योगेन्द्र कुमार डालमिया, बी० कॉम० भी अपने पैतृक व्यवसाय में संलग्न हैं। श्री डालमिया जी की रुचि प्रारम्भ से ही समाज सेवा कार्यों में रही है। स्थानीय क्षेत्र में तो आपका सेवा कार्य चलता ही है, सम्प्रति आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा (पंजीकृत) के आजीवन सदस्य हैं और श्री अग्रसेन जन कल्याण समिति, मेन रोड, वासुदेव भवन, राजगांगपुर (सुन्दरगढ़) उड़ीसा के मन्त्री हैं।

सुरजगढ़ निवासी श्री द्वारका प्रसाद जी सराफ़ की सुपुत्री श्रीमती विद्या डालमिया श्री हनुमान प्रसाद जी डालमिया की धर्मपत्नी हैं। आपके चार पुत्र और एक पुत्री गृह की शोभा हैं।

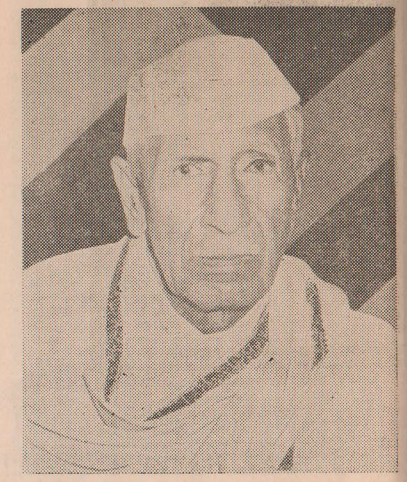

श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल
"मास्टर जी"
२१/३३, शक्ति नगर, दिल्ली-७

अखिल भारतीय ख्याति लब्ध अग्रवाल समाज के नेता, अग्रवाल जगत में जागृति और संगठन का बिगुल बजाने वाले, अग्रवाल समाज के भीष्म पितामह, मास्टर जी के नाम से विख्यात श्रद्धेय लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल उन महापुरुषों में से हैं जिनका जीवन परिचय पंक्तियों में नहीं लिखा जा सकता। इनके लिए तो वृहत् ग्रन्थ की आवश्यकता है। अतः संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि आज दिन दिल्ली में जो जागृति अग्रवाल समाज में दीख पड़ती है उसका श्रेय श्री मास्टर जी को ही है।

१० जून सन् १९०० में ला. प्रभुदयाल जी बंसल के घर जन्मे मास्टर जी ने अपने जीवन के ५० वर्ष अग्रवाल समाज की सेवा में अर्पित किए हैं। निम्नांकित संस्थाएं मास्टर जी के कृतित्व के कीर्तिमान हैं :—

वैश्य कोआपरेटिव बैंक, अग्रवाल धर्मशाला, शक्ति नगर, दिल्ली, तथा श्री अग्रसेन आश्रम, हरिद्वार।

आ. भा. अग्रवाल महासभा को आपने महामन्त्री रहकर पाला पोषा है। आज भी इसके मानद संरक्षक हैं। बहुत समय तक आपकी प्रेरणा लेकर दिल्ली में आज दिन एक दर्जन से अधिक अग्रवाल भवनों का निर्माण हो चुका है। देश में अग्रसेन जयन्ती का जो प्रचार हुआ है उसके पीछे मास्टर जी की प्रेरणा और क्रियाशीलता ही है।

आपके सुपुत्र श्री चन्द्र मोहन जी आपके संस्थापित अग्रोहा तीर्थ का सम्पादन बड़ी योग्यता के साथ कर रहे हैं।

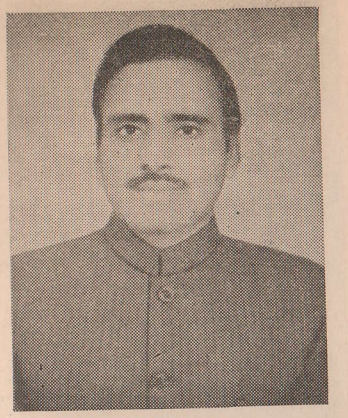

कविराज धर्मवीर,
३२०, नरेला, दिल्ली-४०

नत्वं कामये राज्यं न मोक्षम् न पुनर्भवं।
कामये दुःख तप्तानां प्राणीनां आर्त नाशनं॥

जो चिकित्सक वैभव, मोक्ष और पुनर्जन्म की कामना से मुक्त हो, मात्र रोग पीड़ित जनों को रोगमुक्त कर उनकी पीड़ा हरने की ही कामना करता है उसके लिए स्वर्ग सुख भी हेय है। ऐसे गुणों से मंडित नवयुवक धर्मवीर ने चिकित्सा व्यवसाय को प्रतिष्ठित किया है। आपने बी० आई० एम० एस० परीक्षा उत्तीर्ण कर विशेषज्ञ (स्नातकोत्तर) डिग्री से अपने को अलंकृत किया है। सम्प्रति आप नगर निगम आयुर्वेदिक औषधालय, बवाना, दिल्ली में चिकित्साधिकारी हैं।

आप गत २० वर्षों से विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से समाज सेवा करते आ रहे हैं। अतः आपका घनिष्ठ सम्बन्ध निम्नांकित संस्थाओं से है—

१ युवक समाज, नरेला के निवर्तमान, महामन्त्री, प्रधान,

२ आर्य युवक परिषद के निवर्तमान प्रधान,

३ महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, नरेला के संस्थापक,

४. अन्तर्देशीय संस्कृत प्रतिष्ठानम्, बम्बई के उत्तरांचलाध्यक्ष, अखिल भारतीय आयुर्वेद विशेषज्ञ (स्नातकोत्तर) सम्मेलन के महा मन्त्री, अग्रवाल सभा, नरेला के संयोजक तथा अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के कार्यकारिणी सदस्य।

आपका जन्म श्रीयुत हकीम हरलाल जी के घर में सन् १९४४ में हुआ था। आपको चिकित्सा व्यवसाय वंश परम्परा से प्राप्त हुआ है।

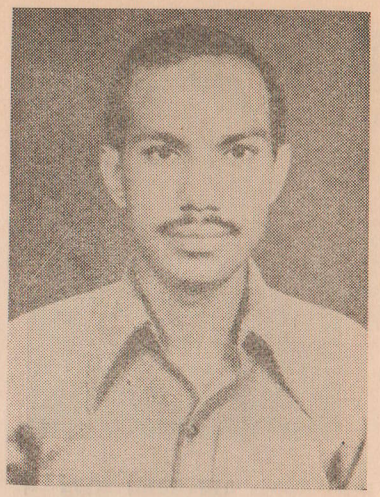

श्री मुन्ना लाल जैन,
२३८०, जैन काटेज,
नरेलामंडी एक्सटेंशन, नरेला, दिल्ली-४०
फोन ८६७०७

सत्यनिष्ठा, अहिंसा, प्रेम और विनम्रता के अलंकारों से विभूषित, व्यवसाय से राष्ट्रनिर्माता अध्यापक, श्री मुन्ना लाल जी जैन अपने नगर की शोभा हैं। आपने क्रोध को जीत लिया है। वाणी में मधुरता लिए कर्मठ, अनथक उत्साही कार्यकर्ता के गुणों ने श्री मुन्ना लाल जी के व्यक्तित्व को निखार कर विशिष्टता प्रदान की है।

श्री मुन्ना लाल जी जैन का सम्बन्ध निम्नांकित संस्थाओं से है :—

१. अग्रवाल सभा, नरेला के कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्यकारिणी सदस्य, जैन सभा के मन्त्री तथा सरकारी कर्मचारी संघ, नरेला के महामन्त्री हैं।

आपका जन्म बंसल गोत्रीय श्रीयुत लाला गौरी शंकर जी जैन के घर में सन् १९४८ में हुआ था। आपने एम० ए०, बी० ऐड० परीक्षा उत्तीर्ण करके अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। आप होनहार शिक्षक हैं।

श्री मोहनलाल जी गर्ग,
डब्ल्यू०—४५,
ग्रेटर कैलाश नगर भाग—१
नई दिल्ली—४८

●

श्री अग्रवाल जी प्रारम्भ से ही सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेते रहे हैं। इनके सार्वजनिक जीवन का सार निम्नांकित पंक्तियों में समाविष्ट है जो सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रेरणाप्रद और त्यागमय जीवन का आदर्श हैं।

१ आपने लायलपुर में अग्रवाल समाज स्थापना की और बहुत समय तक मन्त्री रहे।

२ १४ वर्ष तक रेलवे पैसेंजर ऐसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी के नाते आप रेलवे बोर्ड एडवाइजरी कमेटी, जनरल मैनेजमेंट तथा टाइमटेबुल कमेटी के सदस्य रहे।

३ पेपर मर्चेन्ट एसोसिएशन के उपप्रधान तथा मन्त्री पदों पर १९७१-७२ में कार्य किया।

४ अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा देहली के आजीवन सदस्य है और कोषाध्यक्ष रहे।

५ आपने दरियागंज के पथ-पार पुल के पास सार्वजनिक पक्की प्याऊ बनवाई है और बड़े प्रेम से उसका व्यय अपने पास से देते हैं।

६ आपने ग्रेटर कैलाश भाग-१ में वैश्य सभा की स्थापना की।

सेठ मोहनलाल जी गर्ग का जन्म २१-१-१९१९ में लायलपुर निवासी श्री छज्जू राम जी के गृह में हुआ था। पाकिस्तान बनने पर वे १९४७ में देहली पहुंचे और बड़े परिश्रम से कागज का व्यापार आरम्भ किया जिसमें इन्हें प्रभूत सफलता प्राप्त हुई है। इस व्यापार को उन्नत करने में इनके ज्येष्ठ पुत्र श्री जगदीश जी गर्ग का विशेष योगदान है।

एक सफल व्यापारी होते हुए भी आपको शेरो शायरी का बड़ा शौक रहा है। वे कुशल वक्ता, शायर और प्रभु-भक्त, सद्चरित्र व्यक्ति हैं। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती अंगूरी देवी इनके सभी शुभ कार्यों में परम सहायक रही हैं। आपके दो पुत्र श्री जगदीशगर्ग तथा कृष्ण कुमार जी भी इनके अनुगामी और उत्साही नवयुवक हैं।

आज कल आप अपना सम्पूर्ण समय मौन ईश्वर आराधना में व्यतीत करते हैं। केवल मंगलवार के दिन ही आप अपना मौन व्रत खोलते हैं।

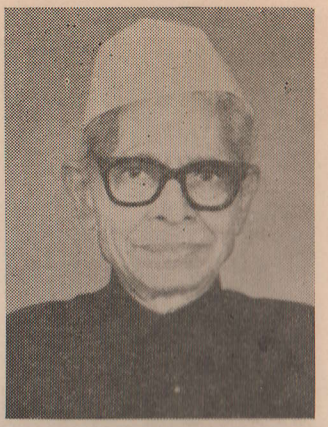

चौधरी श्री त्रिनेत्र नाथ अग्रवाल
३८६६, चरखेवालान, गली कन्हैयालाल
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली के बड़े एवं समृद्ध परिवारों का विकास पुराने मौहल्लों की गहरी गलियों और कटरों में ही हुआ है। आज की तरह खुले मैदानों में कोठियां सुरक्षित नहीं मानी जाती थीं अतः जितना बड़ा आदमी होता था वह उतनी ही गहरी घुमावदार गलियों में रहता था अथवा बड़े फाटकों वाले किलानुमा मकानों में सुरक्षा की दृष्टि से उसका निवास था। इस दृष्टि से मौहल्ला चरखेवालान और उसकी गलियां उसी श्रेणी में आती हैं। इस मौहल्ले की गली कन्हैयालाल में अग्रवाल समाज के जाने माने चौधरी त्रिनेत्रनाथ जी का निवास स्थान है। उनका जन्म सन् १९०९ में मंगल गोत्रीय श्री लाला जंगली मल जी चौधरी के घर में हुआ। श्री अग्रवाल जी की गणना देहली के प्रतिष्ठित एवं समृद्ध बीसा अग्रवाल परिवारों में है।

आप निम्नांकित संस्थाओं से आबद्ध हैं—

१ बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल, दिल्ली की कार्यकरिणी के सदस्य,

२ चार हजार स्वयंसेवकों के इन्द्रप्रस्थीय वालंटियर बोर्ड के उपप्रधान।

३ अग्रवाल मित्र मंडल, चरखेवालान के प्रधान,

४ दिल्ली प्रदेश हाउस आनर्स एसोसियेशन के कोषाध्यक्ष,

आपकी समाज के प्रति समर्पित सेवाओं को दृष्टि में रख कर बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल, दिल्ली की ओर से दिनांक १०-३-८३ को होली मंगल मिलन के अवसर पर लोक सभाध्यक्ष माननीय श्री बलराज जाखड के करकमलों द्वारा मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

पुरानी रहीस बस्ती फरुख नगर के जमींदार लाला बृजानन्द जी की सुपुत्री श्रीमती अंगूरी देवी, श्री त्रिनेत्रनाथ जी की धर्मपत्नी हैं और आपके चार पुत्र सर्वश्री सूरज नारायण ऐडवोकेट, राकेश कुमार एम० कॉम, ललित कुमार ऐडवोकेट, तथा सुशील कुमार बी० कॉम० आपके अनुशासित परिवार की सुयश वृद्धि में योगदान कर रहे हैं।

श्री रोशनलाल अग्रवाल
२४/५२, पंजाबी बाग, देहली-२६

□

विभाजन के पश्चात् पंजाब से आये भाइयों में मैं० रोशनलाल एण्ड ब्रादर, बाजार लालकुँआ, दिल्ली-६ संचालक श्री रोशनलाल अग्रवाल एक ऐसे पुरुष हैं जिनकी सामाजिक सेवायें अनुकरणीय हैं। आपने दिल्ली में आकर अग्रवाल बन्धुओं विशेषतः पंजाब से उखड़कर आये अग्रवाल भाइयों में, संगठन की भावना उत्पन्न करने में विशेष उत्साह तथा लगन से काम किया है।

आपका जन्म ३ अगस्त १९१९ को पश्चिमी पंजाब के स्यालकोट नगर में हुआ था। आपका परिवार सामाजिक व जातीय कार्यों के लिए प्रसिद्ध था। आपके मन में समाजसेवा की भावना वंशानुगत है।

पाकिस्तान से दिल्ली में आये सभी अग्रवाल भाइयों के सम्मुख एक बड़ी समस्या पारस्परिक परिचय की थी। अतः जनवरी १९५५ में आपने अग्रवाल सभा (पंजाबी बाग) दिल्ली की स्थापना की। आपके अनथक तथा निस्वार्थ कार्य के परिणाम स्वरूप इस सभा ने दिल्ली में सराहनीय सेवाएँ की हैं। सभा की ओर से अग्रवाल पत्रिका भी चलती रही और मेले के रूप में जयन्ती मनाने की नई प्रथा डाली।

अग्रवाल भाइयों में परस्पर मेल जोल बढाने तथा उन को अपना बनाये रखने में मदद पहुंचाने की दृष्टि से आपने एक **'अग्रवाल बगीची'** ट्रस्ट बनाने की योजना बनाकर १९६२ में इस नाम से रजिस्टरी कराई। इसके लिए पंजाबी बाग में ३६०९ वर्गगज का एक प्लाट खरीदा गया जिस पर आज दिन विशाल भवन खड़ा है।

इस आधुनिक ढंग के सामाजिक केन्द्र में व्यायामशाला, स्नानगृह, पुस्तकालय, वाचनालय, क्रीड़ा क्षेत्र आदि सार्वजनिक स्थान की सुविधायें उपलब्ध हैं।

श्री रोशनलाल अग्रवाल सरीखे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निश्चय ही समाज की शोभा है। आप अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा के पुराने आजीवन सदस्य हैं।

श्री दयाचन्द गर्ग,
४६९६, शोरा कोठी,
पहाडगंज दिल्ली-५५

रोहतक निवासी श्री शिवप्रसाद जी के सुपुत्र श्री शेरसिंह जी ऐडवोकेट देहली के सुप्रसिद्ध समाज सेवी हैं। इनके सुपुत्र श्री दयाचन्द्र जी गर्ग का जन्म सन् १९३८ में रोहतक में ही हुआ था और तभी वे अपने पिताजी के साथ देहली आ गये। श्री दयाचन्द जी ने पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की और १२ वर्षों तक सरकारी सेवा में कार्यरत रहे। सम्प्रति गत १४ वर्षों से एक निजी संस्थान में मैनेजर के पद पर कार्य कर रहे हैं।

श्री दयाचन्द्र जी अपने समाजसेवी पिताश्री का अनुसरण करते हुए समाज सेवा में सक्रिय हो गये। आप प्रारम्भ से ही अग्रवाल पंचायत, पहाड़गंज के कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं अतः पिछले दिनों आपको सर्वसम्मति से इस संस्था का मन्त्री निर्वाचित किया गया है। आप बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल, दिल्ली के कार्य-कारिणी सदस्य हैं तथा दिल्ली पुलिस के ट्रेफिक वार्डन हैं। आप सनातन धर्मसभा, दिल्ली में पहाड़गंज की ओर से प्रतिनिधि हैं। साथ ही अग्रवाल पंचायत पहाड़गंज की ओर से निर्वाचित प्रतिनिधि के नाते अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के कार्य-कारिणी सदस्य हैं। आप वर्तमान राजनीति से बहुत दूर रह कर हर समय सामाजिक कुरीति निवारण की दिशा में पूर्ण रूप से समर्पित हैं।

आपकी धर्मपत्नी आपकी यशवृद्धि में सहायक हैं और आपके तीन पुत्र गृह शोभा हैं।